जनवरी 2023 से मार्च 2023

वर्ष 9 अंक 1 मूल्य 50 रुपये

साहित्य सरोज

RNI NO UPHIN/2017/74520

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

महिला उत्थान विशेषांक

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-9 अंक -1

RNI No- UPHIN/2017/74520

माह जनवरी 2023 से मार्च 2023

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक -: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादक -: श्रीमती रेनुका सिंह गाजियाबाद

प्रधान कार्यालय -: मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो0 9451647845 ईमेल

sahityasaroj1@gmail.com

बेवसाइट-:

https://www.sarojsahitya.page

https://sahityasaroj.com/

जिला प्रतिनिधि बनें

सम्पर्क करें 9451647845

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रघुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॉ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा। प्रति अंक -30रूपये मात्र,

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर
चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

आपके नाम

साहित्य सरोज का वर्ष 9 अंक 1 महिला उत्थान विशेषांक 02 अप्रैल 2023 को आपके हाथों मे है। इस पत्रिका शुरूआत वर्ष 2014 में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद में रहने वाली एक गृहणी श्रीमती सरोज सिंह द्वारा की गई थी। 02 अप्रैल 2017 को काल के क्रूर हाथों ने असमय ही श्रीमती सरोज सिंह को अपने आगोश ने लिया। श्रीमती सरोज सिंह के गोकुल धामवासी होने के बाद इस पत्रिका ने उनके सपनों को पूरा करने का वीणा उठाया और साहित्य और महिला उत्थान के दिशा में कार्य करना प्रारंम्भ किया।

पत्रिका ने हिन्दी साहित्य के पुरोधा गोपाल राम गहमरी जिन्हें हिन्दी साहित्य लगभग भुला चुका था उनकी स्मृति में तीन दिनों राष्ट्रीय स्तरीय साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन प्रारंम्भ किया। जिसमें कवि सम्मेलन, कवयित्री सम्मेलन, परिचर्चा, भ्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। 2015 से प्रारंम्भ हुए इस कार्यक्रम में अब तक देश-विदेश के साहित्य भाग ले चुके हैं।

जहॉं तक बात महिला उत्थान की है तो मैं स्वीकार करती हूँ कि इस क्षेत्र में हम जितनी अपेक्षा थी कार्य नहीं कर पाये। लेकिन इस वर्ष पत्रिका की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की 6वीं पुण्यतिथि 02 अप्रैल से एक ''घर से'' नामक संस्था का गठन कर महिला को विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार करने का अवसर प्रदान करने जा रहे हैं। आशा है कि आप हमारी मदद करेंगें।

कान्ति शुक्ला प्रधान संपादक

इस अंक में

पुण्यतिथि पर विशेष	लेख	संपादक रेनुका सिह	04
ये लफ़्ज आईने हैं	लेख	कुमकुम काव्यकृति	05
अति महत्वाकांक्षा की भेट	लेख	सीमारानी मिश्रा	06
नारी तुम नारायणी हो	कविता	रीतू गर्ग रवि	07
अशिक्षा से बढ़ते दुष्कर्म	लेख	पूजा गुप्ता	08
ग़ज़लें गोविन्द सेन की			10
खुशबू का सौदा	कहानी	अरूण अर्णव खरे	11
मीठा बोल बहुत है	कविता	उमेश पाठक	15
गुलाबी कमीज	समीक्षा	ओमप्रकाश क्षत्रिय	16
मेरा जुनून	जीवन संघर्ष	हीरल कवलानी	17
बिखरी यादें	कविता	मीनाक्षी सांगनेरिया	18
आयो रे फागुन	कविता	आशा कपूर	18
सज़ल	संजय राजभर		18
अलविदा कुंती	कहानी	कमल चंद्रा	19
सार्थकता	स्वविचार	शोभा रानी गोयल	20
सौंदर्य बोध	लघुकथा	उदय श्री ताम्हण	20
परछाई	कहानी	मधुलिका श्रीवास्तव	21
शिक्षा में भाषा का महत्व	आलेख	आरती अयाचित	24
सुरक्षा व जीवन के रंग	लघुकथा	डॉ प्रदीप कुमार	26
महिला सशक्तीकरण	लेख	सुवर्णा जाधव	27
चाय कच्ची है	लघुकथा	पूनम झा	28
त्यौहारों का बदलता स्वरूप	लेख	सुधा दुबे	29
गार्बेज ट्रक	कहानी	डॉ आरती बाजपेयी	32
जैसा देश वैसा भेष	कहानी	सोनल मंजू	33
रेखा की गज़ल			34
हास्य	कविता	बृजबाला दौलतानी	34
कविता में स्त्री-विमर्श	शोधपत्र	डॉ माया दुबे	35
प्यारा जीवन	बाल कहानी	चित्रा चतुर्वेदी	39
जीवन शैली	स्वविचार	सरिता सिंह	39
बेटी की डोली	कहानी	शीला श्रीवास्तव	40
नारी सशक्तिकरण	आलेख	डॉ प्रिया सूफी	41
मेरा स्कूल	कविता	दिप्ति सिंह	42

https://sahityasaroj.com/

शार्टफिल्म में अभिनय एवं मॉडलिंग करने के इच्छुक संम्पर्क करें
9451647845 अखंड गहमरी

साहित्य सरोज की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की 6वीं पुण्यतिथि पर विशेष

वर्तमान समय में बढ़ती आबादी, पर्यावरण एवं बेरोजगारी एक ऐसी समस्या है जिससे भारत ही नहीं बल्कि संसार के हर देश परेशान हैं। विश्व के प्रत्येक देश इस समस्या से जूझते हुए इसके निदान के लिए तरह तरह के उपाय कर रहे हैं।

पहले की अपेक्षा अब सरकारी क्षेत्र से न सिर्फ छटनी की प्रक्रिया बढ़ी है बल्कि सरकार अपने प्रतिष्ठानों को तेजी से नीजी क्षेत्र को संचालन हेतु या तो लीज पर दे रही है या उसकी बिक्री कर रही है। यदि हम साधारण भाषा में कहें तो सरकारी नौकरीयों की बात करें तो आज के परिवेश में सरकारी नौकरी पाना नाकों चने चबाना जैसा हो गया है।

नीजी क्षेत्र भी बढ़ती बेरोजगारी का फायदा उठाकर श्रमिक कानून को ताक पर रखते हुए मनमाने ढ़ग से न सिर्फ कार्य करवाते हैं बल्कि श्रमिकों का तरह-तरह से शोषण भी करते हैं। भूख और परिवार चलाने की मजबूरी के कारण मानव यह सब सहते हुए नौकरी करने को मजबूर है। यदि वह नीतियों को विरोध करता है तो उसके पीछे हजारों की लाइन लगी है उस नीति को स्वीकार कर नौकरी करने के लिए।

ऐसे में स्वरोजगार जोखिम भरा होते हुए भी एक स्वाभिमान से जिन्दगी जीने एवं आर्थिक जरूरत को पूरा करने का एक सशक्त माध्यम है। स्वरोजगार न सिर्फ आर्थिक आजादी देता है बल्कि वह दूसरों को रोजगार प्रदान करने का अवसर एवं जिन्दगी को अपने हिसाब से जीने का अवसर भी प्रदान करता है।

साहित्य सरोज पत्रिका अपनी संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की 6वीं पुण्यतिथि पर महिला उत्थान कार्यक्रम के तहत भारत में बढ़ती बेरोजगारी को दूर करने का एक छोटा सा प्रयास करने जा रही है। जिसके तहत वह घर बैठे खाद्यान, सजावट, फिल्म, पर्यटन, स्वास्थ, फैशन, धर्म के क्षेत्र में प्रयोग होने वाली वस्तुओं का निमार्ण गृहणीयों द्वारा निर्माण करा कर उसे राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय बाजार में आनलाइन बेचने का कार्य करेगी।

मैं मानती हूँ कि आज के समय में यह कार्य कई प्रकार की राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय कम्पनीयाँ कर रही है। प्रतिस्पर्धा आसान नहीं होगी लेकिन इसके साथ यह भी आपको मानना पड़ेगा कि बाजार में आपके तैयार सामानों की गुणवत्ता, पैकिंग, विज्ञापन के साथ-साथ ईमानदारी के साथ-साथ उपभोक्ता तक आसानी से अपने सामानों की पहुँच बनाने वाले लोग न सिर्फ अपनी मंजिल पा लेते हैं बल्कि अपनी एक अलग पहचान बना कर सामाज को नई दिशा देने में सफल होते हैं।

भारत ही नहीं अन्तराष्ट्रीय बाजार में इस बात के लाखों उदाहरण मौजूद है कि एक छोटी सी पूँजी और छोटे स्थान से शुरू किये गये कार्य आज बड़ी कम्पनीयों में बदल चुके हैं। चाहे टाटा हो, बिड़ला हो, अम्बानी हो या हल्दीराम हो एक रात में कोई भी आज जिस मुकाम पर है उस मुकाम पर नहीं पहुँच पाया है।

सभी पहलूओं पर विचार करने के बाद मैं आप से कहती हूँ कि आप अपने हौसलें को बुलंद कर साहित्य सरोज के साथ जुड़कर अपने गाँव, शहर में एक छोटी सी जगह पर “घर से” की स्थापना करें और न सिर्फ खुद की बेरोजगारी दूर करें बल्कि अपने आस-पास के लोगों की भी प्रतिभा को निखार कर, उसे प्रशिक्षित कर उनकी बेरोजगारी दूरें और एक स्वस्थ एवं सशक्त भारत के निर्माण में मदद करें।आपके इस कार्यक्रम में न सिर्फ पत्रिका परिवार बल्कि पूरा समाज आपकी मदद करेगा।

यदि आप अपने शहर एवं गाँव में “घर से”

की स्थापना करना चाहते हैं तो हमारी बेवसाइट **https://sahityasaroj.com** **https://dharmakshetra.co.in** को देखें और पहले आकर "घर से" की स्थापना करें।

हम आपको पत्रिका के प्रधान कार्यालय उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद स्थित गहमर गाँव में 02 अप्रैल 2023 को साहित्य सरोज की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह 6वीं पुण्यतिथि पर दोपहर में आयोजित "माँ घुड़दौड़ प्रतियोगिता" एवं रात्रि में आयोजित एकांकी प्रतियोगिता में सादर आमंत्रित करते हैं।

साहित्य सरोज पत्रिका 2 अप्रैल से पाठक जोड़ो अभियान को दुबारा शुरू करने जा रही है, इस अभियान के तहत दो वर्ष की सदस्यता शुल्क 600 रूपये एवं आजीवन 6000 रूपये रखी गई है। यही नहीं आपको पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं अनुभव देने के लिए साहित्य सरोज पत्रिका ने प्रत्येक जिले पर अपना प्रतिनिधि नियुक्त करने की भी योजना बनाई है। जिसके तहत प्रत्येक जिले में अपना प्रतिनिधि बनाकर वहाँ के साहित्यकारों के विकास, जन समस्या एवं महिला उत्थान के दिशा में व्यापक कार्य कर आपको अपनी पहचान बनाने में मदद की जायेगी।

आप यदि साहित्य सरोज के प्रतिनिधि बनना चाहते हैं तो आप साहित्य सरोज की बेवसाइट पर जाकर फार्म भर सकते हैं। पत्रिका आपको कई सुविधाएं भी उपलब्ध करायेगी।

इसी के साथ मैं अपनी बात खत्म करते हुए साहित्य सरोज की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की 6वीं पुण्य तिथि पर उनको अपने श्रृद्धा सुमन अर्पित करते हुए भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि वह उन्हें अपने चरणों में स्थान दें और हम उनके सपनों को पूरा करने में सफल हो।

रेनुका सिंह
संपादक
साहित्य सरोज
98073 03555

"ये लफ्ज़ आईने हैं"

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को परिभाषित करने में उसके द्वारा प्रयुक्त लफ्ज़ो या शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। क्योंकि ये लफ्ज़ आईने हैं, जो इंसान के चरित्र को दर्शाता है।

हमारे पास कितनी डिग्रियाँ हैं या हम कितने शिक्षित हैं इसका पता कागज के बने इन प्रमाण पत्रों से नहीं बल्कि हमारे आचरण द्वारा होता है। हमारे विचार, हमारी भाषा, हमारी आवाज़,हमारे द्वारा प्रयोग में लाए गए लफ्ज़ या शब्द हमारी असलियत को बयाँ करते हैं। जब हम किसी व्यक्ति को सुनते हैं तो बिना उन्हें देखे सिर्फ उनकी आवाज को सुनकर या उनके द्वारा प्रयुक्त लफ्ज़ो से ही हम उनके चरित्र का अंदाजा लगा लेते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने साथ अपनी डिग्रियाँ लेकर नहीं घुमता। घुमता है तो अपने लफ्ज़ो के साथ और उसके ये लफ्ज़ ही दूसरों को उसका परिचय देते हैं।

हमारा बाहरी सौंदर्य कुछ समय के लिए लोगों को प्रभावित कर सकता है परंतु अपनी अमिट छाप छोड़ने के लिए आवश्यक है कि हम अपने लफ्ज़ यानी शब्दों को प्रभावशाली बनाएँ। क्योंकि हमारे नहीं रहने के बाद भी हमारी आवाज़ ही हमारी पहचान होगी। इसलिए बोलते वक्त हमें हमेशा ऐसा शब्दों का चयन किया जाना चाहिए जिससे हमारे मन की सुंदरता परिलक्षित हो।

लफ्ज़ो को मन का आईनों कहा जाता है। हमारा मन कितना सुंदर है या फिर हम अंदर से कितने खोखले हैं इसका बयाँ हमारे मन के आईने यानी हमारे द्वारा प्रयुक्त लफ्ज़ कर देते हैं। इसलिए हमें हमेशा अपने लफ्ज़ो को सजाना होगा यानी मन को सुंदर बनाना होगा और मन को सुंदर बनाने के लिए अच्छे-अच्छे शब्दों को प्रयोग में लाना होगा। जब हम अच्छे लफ्ज़ो का प्रयोग करेंगे तो निःसंदेह हमारे चारों ओर के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा और हम वास्तविक में सुंदर बन पाएँगे। तो आइए हम अपने मन की आईनों को चमकाए और अपनी लफ्ज़ो को अपनी पहचान बनाएँ।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
योगनगरी मुंगेर, बिहार

अति महत्त्वकांक्षा की भेंट चढ़ती ज़िन्दगी

अपनी पहचान बनाने के लिए, सर पर एक जुनून होता है।

निस्वार्थ जग कल्याण के लिए, महत्त्वकांक्षी व्यक्ति जीता है।

"महत्त्वकांक्षा" का अर्थ- उन्नति करने की प्रबल इच्छा, बड़ा बनने की इच्छा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को लेकर कोई न कोई सपना देखता है। अधिकांश लोग केवल सपने ही देखते रह जाते हैं और करते कुछ नहीं। किंतु कुछ लोग अपने लिए जो सपने बुनते हैं उन्हें पूरा करने के लिए जी तोड़ परिश्रम करते हैं। ये कुछ लोग को हम महत्त्वकांक्षी कहते हैं।

महत्त्वकांक्षा का होना जीवन में आगे बढ़ने का सूचक है। यह हमें निरंतर जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। भाग्य के भरोसे बैठने वाले महत्त्वकांक्षी नहीं होते। जो महत्त्वकांक्षी होते हैं वे पुरुषार्थ करते हैं। कला, साहित्य या किसी भी क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने के लिए यदि जुनून है तो आप महत्त्वकांक्षी हैं।

कुछ बड़ा करने की सोच रखो,
जिन्दगी सँवर जाए ऐसा काम करो।
पर उसके लिए भी हद में रहो,
जिन्दगी को बर्बाद मत करो।

महत्त्व और आकांक्षा से निर्मित यह शब्द 'महत्त्वकांक्षा' बहुत कर्ण-प्रिय लगता है। बहुत गर्व से हम कहते हैं मैं बहुत महत्त्वकांक्षी हूँ या अमुक व्यक्ति बहुत महत्त्वकांक्षी है। ऐसा प्रतीत होता है कि महत्त्वकांक्षी होना ही जीवन की सफलता का पर्याय है। कुछ लोग तो इतने महत्त्वकांक्षी होते हैं कि उनके लिए रिश्ते-नाते, घर-परिवार, मान-सम्मान, उचित-अनुचित जैसे शब्दों का कोई महत्त्व ही नहीं रह जाता। किसी भी सूरत में मात्र अपनी महत्त्वकांक्षा को पूर्ण करना ही उनका ध्येय बन जाता है। बिना विचारे एक अँधी-दौड़ में भागे चले जाते हैं। कभी-कभी तो अपनी महत्त्वकांक्षा की पूर्ति करने के लिए ये अति महत्त्वकांक्षी लोग निर्दोष व मासूम लोगों को कुचल कर आगे बढ़ने से भी पीछे नहीं हटते। उनके अंदर का विवेक व उनकी संवेदनाएँ भी उनकी महत्त्वकांक्षा के आगे दम तोड़ देती है। पर कहते हैं न अति किसी भी चीज़ की अच्छी नहीं होती। इस संदर्भ में कबीरदास जी का यह दोहा द्रष्टव्य है-

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप,
अति का भला न बरसना, अति का भला न धूप।

स्पष्ट है कि हर काम की सीमा होनी चाहिए, अति किसी भी चीज़ की हानिकारक होती है। जीवन में संतुलन बनाने की ज़रूरत है। इसी प्रकार यदि 'महत्त्वकांक्षा' शब्द पर विचार करें तो महत्त्वकांक्षी होना ग़लत नहीं है किंतु अति महत्त्वकांक्षी होना ख़तरनाक है। निःसंदेह यदि हम महत्त्वकांक्षी होंगे, जीवन में कुछ अच्छा, उत्कृष्ट या अनूठा करने की चाह रखेंगे और उसके लिए सतत प्रयास करेंगे तो ही दुनिया की इस भीड़ में अपनी पृथक पहचान बना पाएँगे। परंतु विचारणीय प्रश्न यह है कि कहीं हमारी महत्त्वकांक्षा सारी सीमाओं को तोड़ते हुए हमारी ही ज़िंदगी की बलि तो नहीं ले लेगी? क्या अपनी महत्त्वकांक्षा की पूर्ति के लिए हम कुमार्ग पर चलने को भी हम उचित तो नहीं मानने लगे? यदि ऐसे प्रश्नों का उत्तर हाँ है तो ऐसी महत्त्वकांक्षा के साथ हम धीरे-धीरे अपने अंत की ओर ही अग्रसर हो रहे हैं। यदि अपने अतिरिक्त कोई अन्य विचार ही नहीं आ रहा, यदि जीवन में कोई संतुलन ही नहीं रहा तो विचार करना आवश्यक है कि हम सफलता की ओर बढ़ रहे हैं कि मृत्यु की ओर।

वर्तमान समय में लोग अति महत्त्वकांक्षी होते जा रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप वे अपनी महत्त्वकांक्षा की पूर्ति के लिए अपराध करने से भी पीछे नहीं हटते।

दूसरों की लाश पर चढ़कर कहाँ तक जाओगे,
एक दिन तुम भी तो मिट्टी में ही मिल जाओगे।

दूसरों को ग़लत सिद्ध करके स्वयं को

श्रेष्ठ बताने का प्रचलन बढ़ रहा है जो सम्पूर्ण मानव - जाति के लिए विनाशकारी है, इससे मनुष्यता ख़तरे में है। अत्यधिक महत्त्वकांक्षी लोग अक्सर दूसरों पर भी बहुत दबाव डालते हैं व आवश्यक न होने पर भी दूसरों के जीवन में हस्तक्षेप करने लगते हैं। वे लोगों को अपने अनुकूल चलाने की कोशिश करने लगते हैं। इस प्रकार अपनी सफलता के लिए दूसरों को कष्ट या परेशान करने की मानसिकता कहाँ तक तर्कसंगत है?

खुद आगे बढ़ने के लिए दूसरों को मत गिराओ,
दम है तो सबके संग आगे बढ़कर दिखाओ।

सबको साथ लेकर चलना यदि सम्भव नहीं तो दूसरों के मार्ग में अवरोध डालकर आगे बढ़ना भी पूर्णतः अनुचित है। अकसर देखा गया है कि स्वार्थ में लिप्त व्यक्ति स्वयं को महत्त्वकांक्षी सिद्ध करते हुए यदि अपनी योग्यता के बल पर आगे नहीं

बढ़ पाता है तो दूसरों को अयोग्य साबित करके, चापलूसी करके अपने अस्थायी लक्ष्य को प्राप्त भी कर लेता है। किंतु क्या वास्तव में ऐसे व्यक्ति को महत्त्वकांक्षी कहा जाना समीचीन होगा? जो व्यक्ति अपने भविष्य में खोया रहेगा वह वर्तमान को कभी नहीं जी सकता। इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि वर्तमान की भूमि पर ही भविष्य के बीज अंकुरित होते हैं। जो वर्तमान में जीयेगा ही नहीं वह भविष्य कैसे बना सकता है। महत्त्वकांक्षा को पूर्ण करने के लिए सुनियोजित ढंग से जीवन में संतुलन बनाकर चलना पड़ता है। अंधा होकर किसी का पीछा करने वाले को महत्त्वकांक्षी नहीं कह सकते।

अंत में यही कहना सार्थक होगा कि महत्त्वकांक्षी बनना उचित है परंतु अति महत्त्वकांक्षी बनकर नैतिक मूल्यों व जीवन का भी नाश हो जाता है। अतः अति महत्त्वकांक्षी बनने से बचना अनिवार्य है।

ज़िंदगी अनमोल है, जीवन-मूल्य बहुमूल्य हैं,
संतुलन बनाकर चले मनुज तो वह अतुल्य है।

श्रीमती सीमा रानी मिश्रा
हिसार, हरियाणा

नारी तुम नारायणी

नारी तुम नारायणी,
तुम ही जीवन का आधार।
तुम सृष्टि की रचनाकार,
तुम बिन निराधार संसार।
नारी तुम हो फूलों सी कोमल,
कभी पत्थर जितनी कठोर।
पहले अपने मान की खातिर चुप रह
सहती रही हो तुम अत्याचार।
अब सबल होकर तुम,
कर देती हो उनका तिरस्कार।
मां बहन बेटी बहु बनकर,
हर रिश्ते का फर्ज निभाती।
खुद चाहे कितनी दुःख में हो,
सबको खुशियों से महकाती।
नारी तुम प्रेम की मूरत,
ममता और वात्सल्य से भरपूर।
हर हाल में मुस्कुराती हो,
अपना वजूद भुलाकर ना जाने,
कितनी रिवायतें निभाती हो।
हर रिश्ते,हर फर्ज निभाने की खातिर
खुद को सम पत कर देती हो।
नारी तुम सर्वगुण संपन्न,
तुम ही सर्व शक्तिशाली।
नारी तुम नारायणी,
तुम ही जीवन का आधार।

नीतू रवि गर्ग
चरथावल
मुजफ्फरनगर
(उत्तरप्रदेश)

यौन अपराध

अशिक्षा से बढ़ते दुष्कर्म

कई न्यूज चैनल में 15 से 16 वर्ष की आयु से लेकर 18 से 20 वर्ष की आयु तक के कुछ लड़के वाट्सऐप वगैरह के ग्रुप में नाबालिग लड़कियों के साथ बलात्कार करने जैसी बातें, नाबालिग लड़कियों के आपत्तिजनक फोटो और नाबालिग लड़कियों के आपत्तिजनक वीडियो शेयर करने के आरोप में पकड़े गए हैं। नाबालिग लड़कों के विरुद्ध नाबालिग कानून के अनुसार कार्यवाही की जाएँगी और बालिग लड़कों के विरुद्ध बालिग कानून के अनुसार कार्यवाही की जाएँगी। भारत में अपराध बढ़ने का सबसे बड़ा कारण यही है।

ये 20 से 22 वर्ष से कम आयु के लड़के बलात्कार करने की बातें खुलेआम इसलिए कर रहे हैं। क्योंकि अभी इनमें समाज में इज्ज़त के भाव जागृत नहीं हुए है। इन 20 से 22 वर्ष से कम आयु के लड़कों की तरह बड़ी आयु के लोग और यहाँ तक की बुजुर्ग भी बलात्कार करने की बातें करते रहते हैं। अन्तर केवल इतना है कि बड़ी आयु के लोग सोच-समझकर केवल विश्वासपात्र मित्र समूह में ऐसी बातें करते हैं। जिससे उनकी घृणित सोच उजागर नहीं होती।

सार्वजनिक रूप से उनकी छवि साफ़-सुथरी साधारण आदमी की बनी रहती है। वास्तविकता यह है कि भारत में किशोर आयु के बाद से ही अधिकांश लड़के बलात्कार करने जैसी सोच की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बलात्कार का लड़कियों के पहनावे, लड़कियों के नौकरी करने, लड़कियों के रात को घूमने, लड़कियों की जीवनशैली, पश्चिमी संस्कृति या पोर्न वीडियो से कोई लेना-देना नहीं है। बलात्कार के दो कारण होते हैं। पहला कारण लड़की या महिला को सबक सिखाना या महिला से बदला लेना। दूसरा कारण यौन संबंधों को लेकर फैली गलतफ़हमियों और गलत भ्रांतियों के कारण है।

भारत में 80 प्रतिशत बलात्कार का प्रमुख कारण यह दूसरा कारण ही है। इस तरह के बलात्कार रोकने के लिए 10 वर्ष की आयु से ही लड़के-लड़कियों को सही यौन शिक्षा सही तरीके से देना आवश्यक है। बच्चे बड़े होते हुए अपने आस-पास के लड़कों और पुरुषों को लड़कियों और महिलाओं के बारे में गाली-गलौच वाले गन्दे शब्दों में बातें करते देखकर, अपने आस-पास के लड़के और पुरुषों को प्यार के नाम पर यौन संबंधों के लिए लड़कियाँ और महिलाएँ फँसाते देखकर, स्कूल में पुरुष टीचर्स को महिला टीचर्स के साथ प्यार के जाल फेंकते देखकर यौन संबंधों के बारे में बहुत कुछ समझ तो जाते हैं, लेकिन आधा-अधूरा और वो भी गलत और घटिया शब्दों में गलत तरीके से। परिणाम स्वरूप बच्चे बचपन से लड़कियों और महिलाओं को भोग का सामान समझने लगते हैं।

हमारे आस-पास हम आसानी से लड़कियों और महिलाओं के लिए "सामान, माल, पीस, चीज़" इत्यादि संबोधन सुन सकते हैं। ये शब्द माता-पिता या भाई-बहन तो सिखाते नहीं है और ना ये स्कूल की पुस्तकों में लड़कियों और महिलाओं के लिए ऐसे संबोधन लिखे होते है। आप विचार कीजिए कि ये गाली-गलौच और महिलाओं को "सामान, माल, पीस, चीज़" समझने वाला ज्ञान बच्चों को कहाँ से प्राप्त होता है ? फेसबुक में बच्चे गंदे वीडियो देखकर दिमाग में छेड़छाड़, बदतमीजी, जोर-जबरदस्ती, प्यार के नाम पर धोखा करने या बलात्कार जैसे विचारों को अपने मन लाते हैं। बच्चों को गंदे वीडियो देखने के लिए लत जाती है जिसके कारण अपराध बढ़ने लगते हैं यह बच्चे बड़े होते होते गलत क्रियाओं को जन्म देने लगते हैं ।

इसकी लत केवल लड़के ही नहीं लड़कियां भी लगा बैठी हैं लेकिन लड़कियों में गलत और अनुचित बात करते नहीं देखी जाता क्योंकि उन्हें यौन शिक्षा सही से प्राप्त होती हैं। यदि उनके घर का माहौल अच्छा है और वो अच्छे लोगों की संगत में रही हैं। तो एक सही माहौल में यौन शिक्षा सही रूप से परिवार के लोग बता देते हैं जिनमे माँ की अहम भूमिका होती है क्योंकि सही संस्कार माँ द्वारा बच्चों में परिलक्षित होते हैं। हम छोटी आयु से ही यह सीखते हैं कि माँ और माँ समान महिलाओं जैसे दादी, नानी, ताई, चाची, मामी, बुआ, मौसी या जिनके साथ इनमें से कोई एक मुँहबोला रिश्ता बना लिया हो, उनके साथ यौन संबंध बनाना घृणित और नीच कृत्य

है। बहन और बहन समान लड़कियों जैसे चचेरी बहन, ममेरी बहन, फूफेरी बहन, मौसेरी बहन या जिसको मुँहबोली बहन बना लिया हो, उसके साथ यौन संबंध बनाना घृणित और नीच कृत्य है। बेटी या बेटी समान भतीजी, भांजी या जिसको मुँहबोली बेटी बना लिया हो, उसके साथ यौन संबंध बनाना घृणित और नीच कृत्य है। इसलिए ऐसे रिश्ते में किसी भी तरह का यौन संबंधी विचार आते ही अधिकांश लोगों को घिन आने लगती है। लोग ऐसी बातें किसी से कहते नहीं है, लेकिन अन्दर ही अन्दर आत्मग्लानि महसूस करते हैं।

अब तो विज्ञान ने भी यह प्रमाणित कर दिया है कि नजदीकी रिश्तों में यौन संबंध बनाने से समानांतर जीन के कारण कई तरह के विकार उत्पन्न होते हैं। हमारे आस-पास बचपन से माँ, बहन और बेटी के साथ यौन संबंध को घृणित और नीच कृत्य मानने का वातावरण होता है, लेकिन पत्नी, भाभी और साली के प्रति अपमानजनक मज़ाक,अश्लील और आपत्तिजनक बातों का वातावरण होता है। हमारे घर में ऐसा ना हो, लेकिन आस-पड़ोस या किसी रिश्तेदार के यहाँ अधिकांश जगह पत्नी, भाभी और साली के लिए अपमानजनक माहौल ही होता है। यहाँ तक कि "साला-साली" शब्दों का उपयोग गाली के तौर पर किया जाता है। कोई सार्वजनिक रूप से स्वीकार करें या ना करें ? लेकिन ये भी भारत की वास्तविकता है। इसीलिए भारतीय पुरुषों के मन में पत्नी के लिए सम्मान नहीं होता। भाभी और साली के प्रति यौन भावनाएँ उत्पन्न हो जाती है। परिणामस्वरूप देवर-भाभी और जीजा-साली के यौन संबंधों के मामले बड़ी संख्या में आते हैं।

भारतीय पुरुष महिलाओं के ब्वायफ्रेंड, देवर और जीजा बनने के लिए तो हरदम लालायित रहते हैं, लेकिन साला बनने की बात आते ही आगबबूला होकर भड़क जाते हैं। आपने सोचा है कि ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे दिमाग को यह एहसास करवा दिया जाता है कि किसके साथ बनाने चाहिए और किसके साथ नहीं बनाने चाहिए ? और फिर उसी के अनुसार हमारा दिमाग हमारी भावनाओं को नियंत्रित करता है। हमारा दिमाग उचित यौन भावनाओं को उभरने देता है और अनुचित यौन भावनाओं के आने पर आत्मग्लानि महसूस करता है। यही आत्मग्लानि बलात्कार की खबरें सुनकर महसूस होनी चाहिए, लेकिन क्यों महसूस नहीं होती?

अगर आप केवल लड़की के पहनावे, लड़कियों के नौकरी करने, लड़कियों के रात को घूमने-फिरने, पश्चिमी जीवनशैली पर अपनी सोच गंदी रख कर चर्चा करते रहें, तो आगे चलकर घर-घर से बलात्कारी निकलेगा। क्योंकि इन बातों का बलात्कार सहित अन्य यौन अपराधों से कोई संबंध नहीं है। आप यह देखिए कि आपके आस-पास गाली-गलौच और गन्दे शब्दों का उपयोग कैसे रोका जा सकता है ? आपके आस-पास प्यार के नाम पर धोखे, झूठ, धमकी, ब्लैकमेलिंग,जोर-जबरदस्ती जैसे अपनाएं जाने वाले घटिया तरीकों को कैसे रोका जाए ?

हम टीवी सीरियल और फिल्मों में गलत चीज़े दिखाने का आरोप लगाते हैं, लेकिन हम गलत चीज़े देखते हैं, तभी तो टीवी सीरियल और फिल्मों में गलत चीज़े दिखाई जाती है। अगर हम खराब टीवी सीरियल और खराब फिल्मों को देखेंगे ही नहीं, तो खराब टीवी सीरियल और खराब फिल्में क्यों बनेगी ? टीवी सीरियल और फिल्मों में गर्लफ्रेंड बनने के लिए जबरदस्ती, शादी करने के लिए जबरदस्ती जैसी घटिया बातों के बारे में बच्चों को कैसे समझाया जाएँ ? बच्चों को यौन संबंधों के बारे में सही जानकारी सही तरीके से कैसे दी जाएँ ?

जैसे माँ, बहन, बेटी के बारे में यौन विचार आते ही घिन आती है, आत्मग्लानि महसूस होती है, उसी प्रकार बलात्कार और यौन अपराधों के विचार आते ही घिन कैसे आएँ ? आत्मग्लानि कैसे महसूस करवाई जाएँ ? यदि हम बलात्कार सहित सभी तरह के यौन अपराधों को रोकना चाहते हैं, तो इन बातों पर ध्यान देना अति-आवश्यक है।यह नारी-पुरुष, अमीरी-गरीबी, धर्म-मज़हब, जाँत-पाँत और राजनीतिक दलों की समस्या नहीं है। इनका निवारण साधारण लोग ही कर सकते हैं।

अपने बच्चों को यौन अपराधी या बलात्कारी बनने से रोकने के लिए हर माता-पिता को यह प्रण लेना होगा कि वो दस वर्ष की आयु होने के बाद अपने बच्चों के मानसिक स्तर का विशेष ध्यान रखते हुए बच्चों को हर एक बात समझाए।

हमें लड़कियों पर अनावश्यक रोक-टोक लगाने की बजाय लड़कियों को केवल अपनी सुरक्षा हेतु जागरूक करना है। लड़कियों और लड़कियों के घरवालों को लापरवाही से बचना चाहिए। अगर लड़की और लड़की के

घरवाले कोई लापरवाही किये बिना हर इन्सान से सावधान रहें, तो काफ़ी हद तक यौन अपराधों का शिकार होने से बचा जा सकता है।

यह बात कम आयु के लड़कों पर लागू होती है। कम आयु के लड़कों और लड़कों के घरवालों को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनके संपर्क में विकृत मानसिकता के लोग तो नहीं है ? माता-पिता अक्सर अपने बच्चों को समझाते तो है। जब माता-पिता को लगता है कि उनके बच्चे खराब लोगों की संगत में हैं। तब माता-पिता अपने बच्चों से कहते हैं कि इनसे दूर रहो। ये खराब लोग है। लेकिन माता-पिता अपने बच्चों को यह नही समझाते कि वो खराब लोग खराब क्यों हैं और उनसे दूर क्यों रहना चाहिए ? जबकि बच्चों को यह समझाना आवश्यक होता है। क्योंकि जब तक बच्चे को समझ नहीं आएँगा, तब तक बच्चे के दिमाग में कौतूहल बना रहेगा।

बच्चों को यह समझाना आवश्यक है कि किसी का बुरा करना घृणित और नीच कृत्य है। जो लोग ऐसा करते हैं, उनका बहिष्कार करना चाहिए। हर माता-पिता को चाहिए कि अपने बच्चों (लड़का-लड़की) यह विश्वास दिलाए कि किसी भी तरह की कोई असामान्य बात होने पर तुरन्त घर में बताए। और जब बच्चे कुछ भी पूछते या बताते हैं, तो बच्चों की बात सुनकर बच्चों की हर जिज्ञासा को शांत किया जाएँ।

बच्चों के मन में यह डर नहीं होना चाहिए कि घरवाले उनकी बात सुनकर नाराज़ हो जाएँगे। अगर समय रहते बच्चों के दिमाग में ये बातें बिठा दी जाएँ, तो बच्चे स्वयं निर्णय कर लेंगे कि कौन खराब है और कौन सही है ? किससे दूर रहना चाहिए और किनसे संपर्क रखना चाहिए ? यह केवल तभी संभव है, जब माता-पिता इस जिम्मेदारी को समझेंगे और इसके निवारण हेतु प्रयास करेंगे।

पूजा गुप्ता

मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

7007224126

ग़ज़लें गोविन्द सेन की

मरहम लेकर आता है
नमक छिड़क वो जाता है
आग बुझाने आता है
आग लगाकर जाता है
फूलों को गरियाता है
गुण कांटों के गाता है
उसका कोई गीत नहीं है
गीत हवा के गाता है
सौदागर है सपनों का
झूठे सपने लाता है
गीत पराए लेकर भी
अपना ढोल बजाता है
नीचे ही तो आना है
ऊपर चढ़ इतराता है
हाथी बनता है चूहा
बिल्ली से घबराता है

—2—

जी हुजूरी करेंगे नहीं।
उसके बल से डरेंगे नहीं।।
आततायी लुटेरा है जो।
उसका वंदन करेंगे नहीं।।
तेज रफ्तार तूफान है।
पेड़ फिर भी गिरेंगे नहीं।।
बेचकर अपने मान को।
जेब हरगिज़ भरेंगे नहीं।।
आरजू रोटियों की हमें।
पेट वादे भरेंगे नहीं।।

कहानी

खुशबू का सौदा

डोरबेल की आवाज सुनकर मनोहर लाल ने दरवाजा खोला तो सामने खड़े अपरिचित व्यक्ति ने हाथ जोड़ कर नमस्ते की और विनम्रता से कहा - मैं सुखवानी प्रॉपर्टीज़ से आया हूँ, आपका मकान देखना है, किसी ग्राहक से सौदा करने से पहले मकान का मूल्यांकन करना जरूरी है।

ये मेरा मकान है और मैं इसे बेचना नहीं चाहता .. आपको कोई गलतफहमी हुई है, मनोहर लाल ने आश्चर्य से आगंतुक की और देखते हुए कहा।

सी-१४२ कंचन बाग, यही पता दिया था हमें मकान देखने के लिए।

पता तो सही है लगता है आपके साथ किसी ने मज़ाक किया है .. मुझे ये मकान नहीं बेचना

कल मयंक बंसल का मेल आया था हमारे पास, लिखा था कि पंद्रह दिनों में उन्हें मकान बेचना है।

मयंक बंसल का नाम सुनते ही मनोहर लाल को चक्कर आ गया । आगंतुक ने उन्हें पकड़ा और किसी तरह अंदर ले जाकर सोफ़े पर बैठाया । कुछ देर में जब मनोहर लाल संयत नजर आने लगे तो आगंतुक कल या परसों फिर आने का कह कर चला गया। मनोहर लाल अन्यमनस्क होकर पलंग पर लेट गए। उनकी तंद्रा को नेतराम ने आकर भंग किया - बाबू जी कपड़े और पानी रख दिया है आप नहा लीजिए .. पूजा का सामान और फूल भी ले आया हूँ। अरे तू आ गया .. मेरी झपकी लग गई थी।

बाबू जी कुछ तबियत खराब है क्या ?

नहीं रे .. तू बाजार गया था सामान लाने तो अख़बार पढ़ कर बस यूँ ही लेट गया था।

मनोहर लाल ने नहाकर प्रतिदिन की तरह गायत्री मंत्र का जाप किया और गीता के इक्कीस श्लोक पढ़े। पूजा कर उठने को हुए तो लड़खड़ा गए। यदि समय पर टेबल का सहारा न लिया होता तो गिर ही जाते । कुछ देर वहीं पर खड़े रहे फिर संभल कर चलते हुए डाइनिंग चेयर पर आकर बैठ गए। नेतराम ने खाना गरम कर टेबल पर लगा दिया था। खाना खाकर हमेशा की तरह मनोहर लाल अपने कमरे में आराम करने चले गए। बिस्तर पर लेटते ही सुबह वाला प्रसंग उनकी आँखों के सामने आकर खड़ा हो गया - ।मयंक पंद्रह दिनों में ये मकान बेचना चाहता है .. क्या वह यह भी भूल गया है कि अभी मैं जिंदा हूँ और इसी मकान में रह रहा हूँ । मुझसे बात किए बिना ही मकान बेचने का फैसला ले लिया और प्रापर्टी डीलर से बात कर उसे मकान देखने के लिए भी भेज दिया। खुद तो वर्षों से आया नहीं और अब मकान बेचना चाहता है .. अमेरिका में रहते हुए कैसे बेचेगा मकान .. क्या चल रहा है उसके मन में ? क्या चाहता है वह ? इसी मकड़जाल को काटने की उधेड़बुन में उनकी आँख लग गई। आँख खुली तो नेतराम चाय लिए पास ही खड़ा था । घड़ी देखी छह बज रहे थे।

बाबू जी आज बहुत देर तक सोये रहे आप .. थके-थके भी लग रहे हैं। चाय पी लीजिए फिर हाथ-पैर दबा देता हूँ।

नहीं नेतराम .. मैं अब ठीक हूँ .. चाय पीकर थोड़ा टहलने चलते हैं।

मनोहर लाल रोज ही नेतराम के साथ टहलने जाते थे । नियमित और संयमित दिनचर्या थी उनकी इसलिए सतहत्तर साल की उमर में भी कमोबेश फिट थे । सुबह शाम वह कॉलोनी के पार्क में टहलते थे लेकिन नेतराम अकेले नहीं जाने देता था । वह हमेशा उनके साथ जाता । हालाँकि उस दिन मनोहर लाल की इच्छा नहीं कि वह टहलने जाएँ लेकिन क्लांत मन को सुकून पहुँचाने की चाहत और नेतराम के बार-बार तबियत खराब होने के कयास को विराम देने की कामना उन्हें ले गई ।

टहल कर लौटे तो नेतराम डिनर की तैयारी करने किचिन में चला गया और मनोहर लाल बेमतलब ही अखबार उठाकर पढ़ने बैठ गए । मन नहीं लगा तो टी.वी. चालू कर लिया । फिर कुछ सोचते हुए उठे और सी.डी. एलबम उठाकर कोई सी.डी. उसमें खोजने लगे । वह वांछित सी.डी. निकाल कर सी.डी. प्लेयर में लगाने ही वाले थे कि मयंक का फोन गया - पापा जी कैसे हैं आप, मैं आज सुबह ही बोस्टन से बंगलौर आया हूँ कंपनी के काम से .. एक सप्ताह का काम है, कुछ क्लाइंट्स के साथ मीटिंग है .. इसके बाद एक सप्ताह की छुट्टी ले ली है, तब आता हूँ आपसे मिलने।

मैं भला-चंगा हूँ बेटा, नेतराम हमारा पूरा ख्याल रखता है। आज कोई प्रॉपर्टी डीलर आया था तुम्हारा नाम

लेते हुए।।हाँ मैंने ही बोला था उसे कि मैं भारत आ रहा हूँ तो वह मकान देख कर आकलन कर ले मेरी इस विजिट में ही मकान का सौदा हो जाएगा तो अच्छा रहेगा।
पर बेटा तुमने मुझसे पूछा तक नहीं कि मैं क्या चाहता हूँ । अभी तो मैं यहाँ रह रहा हूँ, नेतराम भी साथ में रहता है।
पापा मैंने सब विचार कर लिया है, नेतराम अपनी व्यवस्था कहीं न कहीं कर लेगा और फिर मैं बार-बार तो यहाँ आ नहीं सकता, अभी छुट्टी लेकर आया हूँ तो सोचा ये काम भी इस बार निपटा देता हूँ।
पर बेटा मेरा क्या होगा, मैं कहाँ रहूँगा?

पापा आप कैसी बातें कर रहे हैं .. आप मेरे साथ चलेंगे । मैं वहाँ आकर आपके वीसा रिन्यूवल के लिए फार्म भर दूँगा जब तक आपका वीसा रिन्यू होगा आप किसी ओल्ड एज होम में रह लेना, वहाँ देखभाल भी अच्छे से होती रहेगी। सुनकर मनोहर लाल भौचक्के रह गए । मयंक की बात का कोई उत्तर नहीं दे पाए । वह चुप रहे ।कुछ अंतराल के बाद मयंक की ही आवाज आई - ।मैं अभी रखता हूँ पापा, कुछ गेस्ट आ गए हैं उनके साथ डिनर के लिए जाना है ।

मनोहर लाल ने बड़ी मुश्किल से दो रोटियाँ खाई, खाईं क्या जबरन ठूँस ली ताकि नेतराम फिर कुछ पूछताछ न करने लगे । बिस्तर पर लेटे तो यादों का पिटारा खुलने लगा । जब मयंक जन्मा था तो कैसे इस निर्जीव मकान की दीवारें भी बोलने लगी थीं । दद्दा जी के न रहने के बाद मयंक का आगमन बसंत की तरह था । शारदा ने जब मयंक को अम्मा की गोदी में रखा था तो उन्होंने अम्मा की सूनी आँखों में फिर से इन्द्रधनुष उतरते देखा था । मयंक की किलकारियों ने ही अम्मा के मन में फिर से जीने की ललक जगा दी थी । शारदा की ममता को तो जैसे पूर्णता मिल गई थी । विवाह के आठ साल बाद ईश्वर ने उसकी गोद भरी थी । वह तो एक तरह से बावरी हो गई थी । पल भर के लिए भी मयंक का आँखों से ओझल होना उसे सहन नहीं होता था ।

मयंक स्कूल जाने लगा तो शारदा कमरे की दीवारों से बातें करती रहती । दीवारों को छूकर उसके स्पर्श को महसूस करती .. किलकारियों को सुनने की कोशिश करती, जमीन पर लेट कर उसके पदचाप की आहट सुनती । शारदा के इस पागलपन को मनोहर लाल पुत्र के प्रति माँ का अपार स्नेह मानकर नजर-अंदाज करते रहते । दिन बीतते गए पर शारदा की दिनचर्या नहीं बदली । मयंक जब इंजीनियरिंग करने पुणे गया तो शारदा छुप-छुप कर महीनों आँसू बहाती रही । उसके पास जैसे कोई काम ही नहीं रह गया, नितांत अकेली रह गई । उसे इस हालत में देखकर व्यथित रहते मनोहर लाल अचानक एक दिन नेतराम को लेकर घर आ गए । **6-7** साल का अनाथ नेतराम, उन्हें सिहोरा रेल्वे स्टेशन पर बेसुध हालत में मिला था । शारदा के लिए वह मयंक तो नहीं बन पाया लेकिन व्यस्त रहने का बहाना मिल गया ।

वह उसका पूरा ध्यान रखती । नेतराम भी अपनी उमर से कहीं ज्यादा परिपक्व था । वह भी शारदा की हर बात मानता, सदा उनकी सेवा को तत्पर रहता, बहुत से ऊपरी काम वह स्वयं कर देता। उसका एडमिशन भी शारदा ने पास के स्कूल में करा दिया । उसका होमवर्क भी वह जाँचती और उसे पढ़ाती भी । मयंक जब भी छुट्टियों में आता तो नेतराम भी शारदा के साथ व्यस्त रहता। कभी-कभी मयंक नेतराम को पढ़ाता भी और नेतराम मयंक से खेलों और हॉस्टल के बारे में जानकारी लेता रहता ।

इंजीनियरिंग करते ही मयंक को एक मल्टी नेशनल कंपनी में जहब मिल गई । पहली पोस्टिंग हैदराबाद में मिली । नेतराम और शारदा, मयंक के साथ हैदराबाद गए । मनोहर लाल माँ को अकेला छोड़कर नहीं जा सकते थे । वे दोनों तीन दिन वहाँ रहे और एक पी.जी. में उसके रहने की व्यवस्था करने के उपरांत ही लौटे ।

दो वर्ष पश्चात कंपनी की और से मयंक को एम. आई.टी. से मास्टर्स करने का ऑफर मिला । पूरा खर्चा कंपनी दे रही थी । ऐसा सुनहरा अवसर लाखों में एक को ही मिल पाता है। अतः एव मयंक इस अवसर को छोड़ना नहीं चाहता था । अम्मा और शारदा उसके अमेरिका जाने के विरुद्ध थे। उनकी नजर में जब अपने देश में ही मयंक को अच्छी खासी नौकरी मिल गई है तो इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है। अमेरिका की गोरी मेमों को लेकर भी उनकी धारणा अच्छी नहीं थी । पर मयंक के सामने नया आसमान था। विश्व के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में गिने जाने वाले संस्थान में पढ़ने के नाम से ही वह अभिभूत था ।

मनोहर लाल ने बेटे की इच्छा और उत्साह को देखते हुए अम्मा और शारदा दोनों को मनाया । शारदा तो समझ गई पर शायद अम्मा नहीं समझ पाई । मयंक के जाने के चार महीने पश्चात ही वह चल बसीं, शायद अंदर ही अंदर घुटती रहीं थी और जरा से ऐशो-आराम की

जिंदगी के चक्कर में मयंक का सात समंदर पार जाना वह दिल पर ले बैठी थीं।

मयंक का मास्टर्स पूरा हुआ तो कंपनी ने उसे फिलाडेल्फिया के ऑफिस में ही नियुक्ति दे दी, एक लाख डॉलर से ज्यादा का पैकेज था उसका। शुरुआत में ही इतने बड़े प्लेसमेंट की मयंक ने कल्पना भी नहीं की थी। शारदा उसे - मास्टर्स पूरा करते ही लौट आने का-वादा याद दिलाती तो वह हँस कर टाल देता, कभी-कभी कहता ।यहाँ नौकरी करने का मजा ही अलग है। जिंदगी क्या है इसका सही अर्थ यहीं आकर पता चला है। इसके बाद मयंक ने उन दोनों से पासपोर्ट बनवाने के लिए अनुरोध करना शुरु कर दिया। जब उनने अनसुना किया तो उसने किसी ट्रेवल-एजेंट के जरिए दोनों के पासपोर्ट बनवाने की व्यवस्था भी कर दी। पासपोर्ट बन गया तो उसने ही वीसा के लिए भी एप्लाई कर दिया। उन दोनों को केवल इंटरव्यू के लिए मुम्बई के काउंसुलेट ऑफिस जाना पड़ा।

वीसा मिलते ही मयंक ने दोनों के लिए टिकट की व्यवस्था कर दी। अमेरिका जाते हुए मनोहर लाल मन ही मन बेटे का शुक्रिया कर रहे थे कि उसके कारण उनकी विदेश घूमने की अतृप्त इच्छा पूरी हो रही है। शारदा इस मामले में निर्विकार थी, उसे केवल मयंक से मिलने की खुशी थी और एक उम्मीद कि वह वापसी पर मयंक को आँचल में लपेट कर ले आएगी।

दोनों तीन माह अमेरिका में रहे। मयंक ने दोनों की सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा। खूब सैर कराई, न्याग्रा फाल, न्यूयार्क और वाशिंगटन अपने साथ ही घुमाने ले गया। वाशिंगटन के स्पेस और वार म्यूजियम देख कर मनोहर लाल अभिभूत हो गए। लौटने से कुछ दिन पूर्व दोनों को वह एम.आई.टी. कैंपस दिखाने बोस्टन भी ले गया। विश्व प्रसिद्ध हॉवर्ड यूनिवर्सिटी भी उन्होंने देखी।

इस सबके बीच उन्होंने महसूस किया कि मयंक अमेरिकी माहौल में रम गया है। साफ-सुथरा परिवेश, नियमित जीवन-शैली, अनुशासित समाजिक-व्यवस्था ने उसे पूरी तरह अपने रंग में सराबोर कर दिया है। शारदा ने भी महसूस किया कि मयंक उसके आँचल से भी बड़ा हो गया है। वापसी में शारदा पूरे समय गुमसुम बैठी रही। पंद्रह घंटे के सफर में उसने केवल पोटेटो चिप्स खाए और दो बार ओरेंज जूस पिया।

समय अपनी चाल चलता रहा। मयंक अमेरिका में इतना रम गया कि तीन साल में केवल एक बार भारत आया। शारदा ने बहुत कोशिश की कि वह कुछ दिन रुके और शादी करके वापस जाए। शारदा ने कुछ लड़कियों के रिश्ते भी शार्टलिस्ट करके रखे थे पर मयंक ।अभी कुछ दिन और रुको माँ। कहकर टाल गया था।

कुछ महीनों बाद अचानक मयंक का फोन आया ।माँ मैं अगले रविवार को शादी कर रहा हूँ परेशान मत होइए, इंडियन लड़की है, मेरे साथ काम करती है .. देवप्रिया गांगुली नाम है उसका ।बहुत दिनों से साथ ही रह रही थी। आप लोग आ सकें तो टिकट भेज दूँ।

पता नहीं मयंक ने जानबूझकर बोला था या गलती से उसके मुँह से निकल गया था, पर सुन कर शारदा टूट सी गई। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। बिना शादी किए साथ-साथ ।राम-राम क्या सुना दिया भगवान? मनोहर लाल ने शारदा को किसी तरह समझाया था कि अमेरिका में सब चलता है .. वहाँ लिव-इन रिलेशंस को कोई अन्यथा नहीं लेता। बिना शादी के वहाँ बच्चे तक हो जाते हैं। पर हर तीज-त्योहार पर नियम से वृत रखने वाली शारदा को कहाँ कुछ समझ में आने वाला था। अमेरिका में चलता होगा यह सब, पर मयंक ऐसा करेगा कल्पना से परे था उसके लिए।

कितने लाड़-प्यार से पाला था .. पता नहीं कहाँ गलती हो गई उसकी परवरिश में। क्या कमी रह गई हमारे दिए संस्कारों में ? शारदा ने शादी में जाने से इंकार तो कर दिया पर अंदर ही अंदर कसमसाती रही, टूटती रही। मनोहर लाल उसकी मनोदशा समझ रहे थे। वह खुद भी बेचैन थे पर अपने गम के सैलाब को किसी तरह नियंत्रित किए हुए थे।

इस बीच नेतराम ने बारहवीं कक्षा पास कर ली थी। उसका ऐड्मिशन भी ऊंटी के होटल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट में हो गया पर उसने जाने से मना कर दिया। मनोहर लाल ने उसे बहुत समझाया पर वह टस से मस नहीं हुआ, यही कहता रहा कि वह कोई छोटी-मोटी नौकरी ढूँढ लेगा, पर आप लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाएगा। उसको नहीं उड़ना अनंत आकाश में कि अपने नीड़ का रास्ता ही भटक जाए। उसे छोटी चिड़िया ही बने रहना है जो सदा आँगन में फुदकती रहे ।समय पंख लगाए उड़ता रहा। समय ने शारदा को संभाल लिया है, यह लगने लगा था पर उसकी सूनी-सूनी आँखों को अब भी मयंक का इंतजार है, यह दिखाई पड़ता। वह हमेशा सोचती रहती कि मयंक आयेगा और लिपट कर माफी माँगेगा।

कभी-कभी मयंक उसके सपनों में आता भी, पर माफी माँगने नहीं, कुछ और ऊँचाई पर पहुँच जाने की सूचना देने। मनोहर लाल ने कितनी ही बार शारदा को सोते-सोते चौंक कर उठते हुए देखा था। वह दिलासा देते रहते और शारदा शून्य में निहारती रहती। शुरु-शुरु में रोज बतियाने वाला मयंक सप्ताह में एक बार बात करने लगा, फिर क्रम दो हफ्ते में हो गया और अब तो माह भर से ऊपर हो जाता है उसकी आवाज सुनने को कान तरस जाते।अंदर ही अंदर घुलते हुए शारदा ने एक दिन बिस्तर पकड़ लिया। डॉक्टर की सलाह पर वह और नेतराम कुछ दिन ऋषिकेश और मसूरी के सुरम्य स्थानों में भी उन्हें सैर कराने ले गए। उन्होंने सोचा था कि आबो-हवा बदलेगी तो तबियत बहलेगी पर कुछ खास फर्क नहीं पड़ा। मनोहर लाल ने भाँप लिया था कि शारदा और उनका साथ बस कुछ दिनों का है। उन्होने मयंक को फोन किया कि माँ की तबियत बहुत खराब है एक बार आकर उन्हें देख जाए। मयंक ने स्पष्ट तो कुछ नहीं कहा लेकिन उसकी बातों से मनोहर लाल बहुत कुछ समझ गए।पापा ८-१० दिनों में मेरे प्रोजेक्ट की लॉन्चिंग है, इस समय बहुत काम है एक बार प्रोजेक्ट ऑन एयर हो जाए, फिर मैं आता हूँ, तब तक आप और नेतराम माँ का ख्याल रखना।

दो माह निकल गए। शारदा को आई.सी.यू. में शिफ्ट करना पड़ा। बीस दिन उन्हें वेंटिलेटर पर रखना पड़ा पर इंतजार की भी कोई सीमा होती है। आत्मा कब तक देह में कैद रहकर मोह-माया में बँधी रहती, मुक्त हो गई। मनोहर लाल अकेले रह गए। नेतराम कई दिनों से अपने शिक्षाकर्मी के पोस्टिंग ऑर्डर का इंतजार कर रहा था, वह भी उसी दिन आया और शाम होते-होते अमेरिका से मयंक का फोन भी - पापा, आप दादा बन गए, पोती हुई है। मनोहर लाल अपने आँसू नहीं रोक पाए। फोन उनके हाथ से छूट गया। नेतराम ने फोन उठाया और मयंक को सारा किस्सा सुना दिया। वह चुपचाप सुनता रहा .. शायद रोया भी हो .. लेकिन पूरी बातचीत का लब्बोलुआब यही रहा कि वह इस समय देवप्रिया को छोड़कर नहीं आ सकता।काम का बहुत दवाब भी है क्योंकि आजकल वह बोस्टन में कंपनी के कॉर्पोरेट ऑफिस का हेड है। इसी वजह से वह चाह कर भी माँ को देखने नहीं आ पाया था।

पड़ोस में रहने वाली शकुंतला भाभी शारदा की अंतिम यात्रा की तैयारी कर रही थीं। लाल साड़ी में शारदा को लिपटा देखकर मनोहर लाल की रुलाई छूट गई। वह चौंक कर उठ बैठे। उनकी साँसें तेज-तेज चलने लगी थी, शरीर पसीने से भीगा प्रतीत होने लगा था। कुछ देर निश्चेष्ट पलंग पर बैठे रहे। कुछ सामान्य हुए तो घड़ी देखी। सुबह होने में अभी दो घंटे से ज्यादा समय शेष था। ।मयंक कुछ दिनों में आने वाला है। यह सोच कर पुनः उनकी व्यग्रता बढ़ने लगी।

शारदा जिस घर में दुल्हन बन कर आई थी, उसी की ड्योड़ी से विदा होकर चली गई थी। जब तक जीवित रही घर के कोने-कोने में वह मयंक की खुशबू से ही स्वयं को सुरभित महसूस करती रही। नन्हें मयंक के पदचापों के चिन्ह उसकी नजर में कभी धुँधले ही नहीं पड़े। वह उस जमीन को छूकर कितनी ताजगी महसूस करने लगती थी कितना रोमांचित हो जाती थी। पगली थी वह .. समझ ही नहीं पाई कि ये पगचिन्ह नहीं उसके पंख थे जिनने उसे आसमान में इतनी ऊँचाई पर ले जाकर उड़ना सिखा दिया जहाँ से जमीन दिखती ही नहीं है, फिर जड़ों, अहसासों और संवेदनाओं का क्या ?

चार दिन गुजर गए। मनोहर लाल की व्यग्रता कम नहीं हुई। उस दिन भी उनकी आँखों में नींद नहीं थी। मयंक की ट्रेन सुबह पाँच बजे पहुँचनी थी .. राइट टाइम थी। आधे घंटे में ही वह घर पहुँच चुका था। नेतराम उसके आने का इंतजार ही कर रहा था। मनोहर लाल के जागने का समय नहीं हुआ था। नेतराम ने मयंक के लिए चाय बनाई। तब तक रोशनी खिड़कियों से झाँकने लगी थी। मयंक ने घर के हर कमरे को जाकर देखा, कुछ भी पहले जैसा नहीं। दीवारों के रंग फीके पड़ चुके थे। कई जगह से पलस्तर भी उखड़ा हुआ था। उसने नेतराम से पूछा - । लगता है दो-तीन सालों से पुताई नहीं हुई है .. इस हालत में कौन खरीदेगा इस घर को, आधी कीमत भी नहीं मिलेगी। नेतराम ने कोई उत्तर नहीं दिया। सुनकर चुपचाप खड़ा रहा। घड़ी देखी, सात बज चुके थे। वह मनोहर लाल के लिए चाय बनाने लगा। मयंक कमरे में रखी चीजों को देखने लगा।

नेतराम ने धीरे से मनोहर लाल के कमरे का दरवाजा धकेल कर भीतर की ओर झाँका, देखा मनोहर लाल टेबल पर सिर टिकाए बैठे हैं .. उसकी आहट सुनकर भी वह यथावत बैठे रहे। नेतराम ने चाय टेबल पर रख दी और उनके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा - बाबू जी चाय। मनोहर लाल का सिर एक ओर लुड़क गया। शरीर ठंडा हो चुका था। नेतराम की चीख निकल गई।

वह रोने लगा । मयंक दौड़ कर ऊपर आया । मनोहर लाल दुनिया छोड़कर जा चुके थे । टेबल पर कुछ कागज बिखरे थे, मयंक उठाकर पढ़ने लगा जो उन्होंने नेतराम को संबोधित कर लिखे थे ..

प्रिय नेतराम,

मयंक भैया को माँ का कमरा जरूर दिखा देना, वहाँ अब भी उसकी आत्मा बसती है।वहाँ की हवा आज भी मयंक की खुशबू से सराबोर है। मयंक से कहना, एक बार पंख समेटकर आकाश से नीचे उतरे और महसूस करे यह सब । शारदा की आत्मा को शांति मिलेगी । तुम घर की पुताई करवा देना नहीं तो अच्छी कीमत नहीं मिलेगी । इस काम के लिए बचत के तीस हजार रुपए तकिए के नीचे रखे हैं।

मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सका, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम अपनी नौकरी ज्वाइन कर लेना और हाँ मेरे कमरे की अलमारी में शारदा का मंगलसूत्र और कंगन रखे हैं। उसकी इच्छा थी बहू को देने की अधूरी इच्छा लिए चली गई ,तुम शीघ्र शादी कर लेना और शारदा की इच्छा जरूर पूरी करना । मयंक बेटे मुझे माफ करना। यह मकान मेरे लिए दीवारों से घिरी हुई जगह मात्र नहीं है, इसके इंच-इंच में तुम्हारी और शारदा की खुशबू बिखरी पड़ी है, मैं जीते जी खुशबू का सौदा होते नहीं देख सकता था .. विदा ....।

अरुण अर्णव खरे
डी–1/35
दानिश नगर
होशंगाबाद रोड,
भोपाल (मप्र)
पिन: 462026

मीठा-मीठा बोल बहुत है

मीठा--मीठा बोल बहुत है।
राजनीति का झोल बहुत है।

समरसता प्रस्ताव पगाते,
जातिभेद कर आग लगाते,
संविधान का रोल बहुत है।

प्रगति सुमति की बात करत है,
जन-सेवक बन घात करत है,
खोल का ऊपर खोल बहुत है।

जतिवादी कानून रोज है,
जातिगोल है, जाति भोज है,
ढोल का अंदर पोल बहुत है।

महजिद के वेतन दे हरसे,
मंदिर घात करत है, कर से,
हिन्दू ऊपर टोल बहुत है।

सभी बराबर संविधान से,
भेद-भाव काला विधान से,
ममिला अंदर गोल बहुत है।

सेकुलर नइया हिन्दू डोले,
कायर चमचा जय-जय बोले,
जातीय कटुता होल बहुत है।

भ्रष्ट आचरण, फेंकू बानी,
वोटतंत्र की यही कहानी,
ढोंगतंत्र का मोल बहुत है।

उमेश कुमार पाठक 'रवि
रवि सदन,
वनसप्ती नगर, बक्सर
(बिहार) 802101

समीक्षा– गुलाबी कमीज़ रहस्य रोमांच से भरपूर उपन्यास

उपन्यास-गुलाबी कमीज़, उपन्यासकार- कामना सिंह
प्रकाशक- भारतीय ज्ञानपीठ, 18-इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली- 110033 मोबाइल नंबर 93505 36020
पृष्ठ संख्या- 135 , मूल्य- 270

बच्चों के लिए उपन्यास लिखना टेढ़ी खीर है। इसको लिखते समय बहुतसी बातों का ध्यान में रखना पड़ता है। उसका कथानक बड़ों से अलग होता है। उसकी कहानी सीधी, सरल व सहज हो। भाषा शैली सरल हो। इसमें प्रवाह और रोचकता का ध्यान रखा गया हो। बच्चों में लिखे उपन्यास का आरंभ रोचक प्रसंग से किया गया हो। ताकि उपन्यास का आरंभ पढ़कर बच्चा उसे उपन्यास को पूरा पढ़ने को लालयित हो जाए। यह बात दीगर है कि यह शर्त बड़ों के उपन्यास पर भी लागू होती है। मगर उनके उपन्यास में यह नियम शिथिल हो जाए तो भी चल सकता है।

दूसरी बात, बच्चों उपन्यास तभी निरंतर आगे पढ़ते हैं जब उनको उसमें एक के बाद एक नई रोचक कहानी मिले। उसी के साथ उपन्यास की मूल कहानी आगे बढ़ती रहे। यानी हरेक भाग में रहस्य के साथ अंत में उसका समाधान होने के साथ एक नया रहस्य का सृजन हो। तभी बच्चे उपन्यास पढ़ते हैं। इस परिपेक्ष में देखे तो उपन्यासकार कामना सिंह का समीक्ष्य उपन्यास- गुलाबी कमीज़, इस कसौटी पर कितना खरा बैठता है? उपन्यासकार ने यह उपन्यास वैश्विक महामारी कोरोना काल के दौरान लिखा था। जब लॉकडाउन के दौरान अनेक मजदूरों का काम छिन गया था। वे रोजी रोटी से मोहताज हो गए थे।

इसी पृष्ठभूमि पर इसके कथानक का निर्माण किया गया था। इसका कथानक इतना भर है कि इसका नायक हीरा ११ साल का मासूम बच्चा है जो कोरोना के भयंकर संत्रास से रूबरू होकर दिल्ली से अपने गांव की यात्रा करता है पुनः दिल्ली लौट आता है। इसी भयंकर त्रासदी को झेलते हुए में पैदल ही निकल पड़ते हैं। इस कथानक पर उपन्यास की कथावस्तु का सृजन किया गया है। उपन्यासकार कामनाासिंह ने १४ भाग के इस उपन्यास का आरंभ रोचक ढंग से किया है। उपन्यास के आरंभ में वे लिखती हैं- २४ मार्च २०२०। पूर्व दिल्ली की कमला बस्ती। रात के १०:०० बज रहे हैं। इसी रोचक पंक्ति से उपन्यास में उत्सुकता जगाती उपन्यास का आरंभ करती है। उपन्यास की कहानी इतनी है। हीरा के अपने कुछ सपने हैं। वह उसे देखते हुए पैदल ही माता-पिता के साथ चल देता है। यह उन सपनों को रास्ते में पूरा करते हुए मंजिल पर पहुंचता है। आखिर उसे अपने सपनों की मंजिल मिल ही जाती है या नहीं? यह उपन्यास के अंत में पता चलता है।

उपन्यास की भाषा, सरल, सहज व रोचक है। उपन्यासकार ने छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया है। वाक्य सरल व रोचक हैं। भाषा में प्रवाह बना हुआ है। कहानी रोचकता से आगे बढ़ती है। उपन्यास की मूल कहानी के साथ-साथ कई सहायक कहानियां भी चलती है। रास्ते में कई कठिनाइयां आती है। उसका समाधान होता है तो दूसरी समस्या आ जाती है।

कहने का तात्पर्य है कि बच्चों के उपन्यास की कसौटी पर यह उपन्यास खरा उतरता है। इसकी पृष्ठ सज्जा अच्छी है। त्रुटि रहित मुद्रण ने उपन्यास की गुणवत्ता में श्रीवृ(की है। उपन्यास का आवरण आकर्षक है। उपन्यास का मूल्य २७० बच्चों के मान से अधिक है। मगर बढ़ते मुद्रा मूल्य के कारण इसे वाजिब कह सकते हैं। इस समीक्षक को आशा है कि बाल साहित्य में इस उपन्यास का जोरदार स्वागत किया जाएगा।

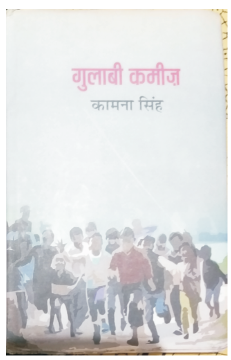

समीक्षक ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश',
मित्तल मोबाइल के पास, रतनगढ़,
जिला– नीमच (मध्य प्रदेश)
पिनकोड–458226,
मोबाइल नंबर 7024047675

मेरा जुनून

उत्तर प्रदेश के आगरा में पली बड़ी मैं 'दयालबाग़ शिक्षण संस्थान' से एम.ए., बी.एड. करते हुए 'गोल्ड मेडल' प्राप्त किया। जीवन के आरंभिक दौर से ही साहित्य में रुचि रही जिसके चलते कवितायें लिखने का शौंक तथा कॉलेज में भी अनेक बार पाठ्यसहगामी प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए विजयी रही।"आकाशवाणी आगरा रेडियो स्टेशन" में अपनी काफ़ी कवितायें पढ़ीं। आशुभाषण, वार्ता तथा संवाद आदि में भी भाग लिया। आगरा के ही लोकल टीवी चैनल पर समाचार वाचक भी रही। विद्यालय में अध्यापन करते हुए सरकारी नौकरी 'विशिष्ट बीटीसी' के अंतर्गत चयन हुआ।

प्रशिक्षण के दौरान ही मेरा विवाह विदेश में रहने वाले दीपक कुमार के साथ संपन्न हुआ। नौकरी करने की इच्छा अधूरी रह गई और मैं अपने पति के साथ विदेश चली गई। घर में बैठना मेरे स्वभाव के विपरीत था। मैं नित्य दिन कुछ नया करने का सोचती रही। इस दौरान मेरी मुलाकात कुछ अपने देश के लोगो से हुई जो बहुत दिनों से विदेश में रह रहे थे, वह अपनी सभ्यता-संस्कृति को लगभग भूल चुके थे। मैनें एक टीम बना कर अध्यापन का कार्य करते हुए उन भारतीय समुदाय में सांस्कृतिक गतिविधियों को आगे बढ़ाया। कालान्त में हमारे बाग में चेष्टा कवलानी तथा केया कवलानी के रूप में पुष्प की तरह दो पुत्रियों ने जन्म लिया।

विदेश में सब कुछ था, पद-पैसा, ऐशो-आराम लेकिन भारत की मिट्टी की यादें ज़िन्दगी के अधूरा पन का एहसास देती। अपनों से दूर जिन्दगी कहीं खोती नज़र आ रही थी। भारत का प्रेम मुझे खीच रहा था। मैं अपना सब कुछ समेट कर कुछ वर्षों पूर्व ही भारत वापस आई और अन्य ग़ैर सरकारी संगठनों तथा संस्थाओं से जुड़कर सामाजिक कार्य करने लगी।

इस दौरान मेरी मुलाकात एक गैर सरकारी संस्था के डायरेक्टर राजीव कुमार से हुई । वह बिहार के जय नगर में एक "ग्रीन स्कूल" तथा "पुस्तकालय" बनाना चाहते थे। जिससे आर्थिक रूप से असमर्थ विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जा सके। इस काम में मेरी पुत्रियाँ चेष्टा व केया दोनो ने मदद की ।हम मिलकर ऑनलाइन शिक्षा पद्धति से वहाँ के बच्चों को प्रशिक्षण देते, नैतिक मूल्यों वाली कहानियाँ सुनाते जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। इसके साथ ही मैनें अपना पुराना काम भी जारी रखा। विदेश में रखने वाले भारतीय व वहाँ के मूल निवासीयों को ऑनलाइन हिन्दी सिखाने वं भारतीय सभ्यता-संस्कृति का ज्ञान देने का कार्य भी करती रही ।

जब भी मैं अपने शहर में बाहर निकली तो महिलाओं की हालत देख कर मुझे काफी दुख होता। मैं अपनी पुत्रियों के साथ मिल कर महिला सशक्तिकरण के लिए प्रयास करने लगी। निर्धन परिवारों को शीतकाल में ऊनी वस्त्र देना तथा मेडिकल किट्स एवं सैनिटरी पैड्स दिलवाना, उन्हें रोजगार के लिए तैयार करना, उन्हें सफाई एवं पर्यावरण के दिशा में बोध करान मेरी दिनचर्या में शुमार हो गया।

अपनी सोसाइटी में काफ़ी ईवेंट्स पर मैं एंकरिंग का कार्यभार भी संभालती हूँ यहीं पर 'मिसैस केपटाउन' ब्यूटी कॉन्टेस्ट का ख़िताब भी जीत चुकी हूँ। कोरोना काल में एमेज़ोन के किंडल एडिशन पर मेरी कविताओं की चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'वॉक्सिट ऐप' पर अपनी आवाज़ दे चुकी हूँ जिस पर मेरी कहानियों और कविताओं की काफ़ी सराहना हुई है।प्टत ऑडियो भी रिकॉर्ड किए हैं।

जीवन के इस भागदौड़ और व्यस्तता के बीच भी मैनें अपने कंटेंट राइटिंग के शौक को भी जिन्दा रखा। अनेक पत्र पत्रिकाओं के लिए लिखना शुरू किया। मेरे कान्टेंट और विचारधारा का प्रभाव था कि कई पत्र-पत्रिकाओं में हमारे आलेख को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया और उसकी काफी सराहना हुई। हमारी सोसाइटी में बीएमबी नामक पुस्तकालय है। नैन्सी अग्रवाल इस पुस्तकालय की संचालिका है। हम उनके द्वारा आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं और समय-समय पर विजयी होकर पुरस्कार भी पाते हैं। पढ़ने का शौक़ मेरा इसी पुस्तकालय से बड़ा है। आज मेरे घर पर भी एक छोटा पुस्तकालय है इसका श्रेय नैन्सी जी को ही जाता है।

अपने सिंधी समाज में सिंधियत जो मान' जिसकी डायरेक्टर हूँ, 'राष्ट्रीय सिन्धी मंच', 'भारतीय सिंधी संगम' आदि की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सचिव हूँ। अनेक सिंधी कार्यक्रमों में भी ऑनलाइन तथा ऑफ़लाइन संचालिका रह चुकी हूँ। हास्य व्यंग्य कवितायें सुनाकर श्रोताओं का दिल जीत चुकी हूँ। अपनी क्षेत्रीय भाषा सिंधी के विकास के लिए भी अनेक ऑडियो-विडियो रिकॉर्ड कर जन संदेश प्रेषित कर चुकी हूँ। बुलंदियों की ऊंचाइयां छूने का सपना आज भी देखती हूँ । अभी अनेकों उपलब्धियों को पाना बाक़ी है ।

एक बहुत बड़ा धन्यवाद माताजी रेखा मुलानी, पिताजी दीपचंद मुलानी ,भाई जितेन्द्र मुलानी के साथ अपनी बहन लीना थावानी को देना चाहती हूँ ।लीना दीदी के बिना मैं आज इस मुक़ाम पर नहीं पहुँच पाती जहाँ मैं आज हूँ।मुझे जब भी जीवन में कोई समस्या आती है तो लीना दीदी मेरी पथ प्रदर्शक बनकर मेरा मार्गदर्शन करती हैं।अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में उनके ही मार्गदर्शन से सफल हुई हूँ।

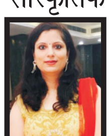

हीरल कवलानी
नोएडा
गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

आयो रे फागुन

आयो रे फागुन आयो रे आयोरे आयो रे।
टेसू सेमल फूल लाल -लाल
पीला किंशुक अमलतास डाल
अनंग मन भायो रे
फागुन आयो रे आयो रे आयो रे।
महुआ महके नीम फूले
अमवा डाली बौराए झूले
गेंहू बाली सोना चमकाने रे
फागुन आयो रे आयो रे आयो रे।
सर्दी चली देश पराये
सूरज में तपन बढ़ जाये
मौसम गरमाये रे।
फागुन आयो रे आयो रे आयो रे।
पूनम रात रंग भर लाये
अबीर गुलाल हुरियारे उड़ाये
सबमिल हुडदंग मचाये रे
फागुन आयो रे आयो रे आ।
गोप गोपियाँ नाचे गायें
फागुन के रंग में रंग जायें
बिरज में कान्हा धूम मचाये रे
फागुन आयो रे आयो रे आयो रे।

आशा सिंहा कपूर

सजल

यदि चाहतें अभी और बढ़ेगी।
तो कष्ट भी अभी और बढ़ेगी।।
जलाशयों को जिंदा रख मरे न।
वरना प्यास अभी और बढ़ेगी।।
रुक जा मत ढहा तू पर्वतों को।
बाढ़ सूखा अभी और बढ़ेगी।।
आधुनिकता में इतना मत बहक।
नंगा नाच अभी और बढ़ेगी।।
मत ले हल्के में ग्लेशियरों को।
तीव्र लहरें अभी और बढ़ेगी ।।
'समित' बेवजह फटकारता नही।
अब की मार अभी और बढ़ेगी।।

संजय राजभर 'समित'

बिखरी राहें

राहें बिखरी हुई थी
फूल और कांटे सजे हुए थे
किसीने राहों में फिर
कांटे ही कांटे बिछा दिए
पैर हुए लहू लुहान
दिल को किया कठोर
ज़िन्दगी बनी कारावास
सजा जो मुक्कमल की गयी
वो यह थी
उनकी हंसी की पात्र बनी
अपनी बेबसी की गुलाम हुई
चुप चाप एक तमाशबीन की तरह
हर पल अपने खोजती रही
उदासी मेरी जीवन की साथी बनी
जो मुझे सबसे ज्यादा प्यारी लगी
जब हंसती हुन तो अपनी
उन पलों की वेदना पर हंसती हुन
जो धुंध के कारण मेरे
आस पास सांप की केचुली सी
साया बन कर घूमती रहती है
में अपने उन पलों के
साये के साथ जीती रहती हुन
क्योंकि इस धुंध को
कोई हटाना नहीं चाहता
मुझे मरते देख कर वो हंसता है,
मुस्कराता है
क्योंकि वो आज भी मुझे
पराया समझता है,
पराया समझता है,

मीनाक्षी सांगानेरिया
कोलकता,
पश्चिम बंगाल
8296808103

कहानी

अलविदा कुंती

"कुंती! जरा एक ग्लास पानी तो पिला दे यार"।
"कुंती! ये फाइल जरा टेबिल पर रखदो न"।
"कुंती! ये कॉफ़ी दीदी को रूम में दे आना"।

सुबह से ही घर में कुंती, कुंती और सिर्फ कुंती ही गूँजता रहता। कुंती भी दौड़ कर सभी काम करती रहतीं, उसके चेहरे की हँसी हम सभी को बहुत अच्छी लगती थी। कभी - कभी मैं बेटियों से पूछती कि, यदि ये कुंती नहीं होंगी तो तुम्हारा क्या होगा? बेटियाँ हँस कर मेरी ओर देख कर बोलती कि, ये तो आपको भी सोचना चाहिए। बात सही थी, और हम ये सोचने भी लगते। हमारी चिंता देख कर कुंती हँसती, कहती - अरे भई! "आप क्यों ये सब सोच रही हों, मैं कहाँ जा रही हूँ। मैं यहीं आपके साथ ही हूँ।"

पति का भोपाल से पंचमढी ट्रांसफर होने से हम चारईमली सरकारी आवास छोड़कर निजी निवास में शिफ्ट हुऐ थे। अभी सैटल होते जा रहे थे, गाड़ी पटरी पर आ रही थी कि, बिल्डिंग के चौकीदार ने पूछा कि, आपको काम के लिए किसी की जरूरत तो नहीं मेरी नातिन हैं। आप कहेंगी तो मैं उसे गाँव से ले आऊंगा।

घर में सभी से चर्चा कर उसे बुलाने का कह दिया। अगले दिन शाम को ही चौकीदार दादा अपने साथ **13-14** साल की गोरी चिट्टी, तीखे नयन नक्श की, तेल लगे लम्बे बालों की दो चोटी में सलवार कुरता पहने लड़की के साथ दरवाज़े पर हाजिर थे । यही था कुंती से हमारा पहला परिचय। अगले ही दिन कुंती अपनी ड्यूटी पर मुस्तैदी से हाजिर। एक दो दिन काम समझने में लगना स्वभाविक ही था, फिर तो वह ऐसी रच बस गईं घर में पता ही नहीं चला कब वह हमारे दिलो दिमाग़ पर छा गईं। हँसमुख स्वभाव, काम में ईमानदारी उसे हमारे और भी करीब ले आया।

बेटियों की किताबें, न्यूज़ पेपर्स, मेरे पेपर्स पढ़ने से हमको उसकी पढ़ने में रूचि का अंदाज़ लगा, पूछने पर बताया कि, पढना तो चाहती थी पर माँ ने भाइयों को ही आगे पढ़ाया, इसे घर के काम में व्यस्त कर दिया। उसका रुझान देखकर उसके घरवालों को समझा बुझा कर पास के ही स्कूल में प्राइवेट **8वीं** में बिठाने के लिए मैं तत्पर हो गईं। एडमिशन, कॉपी किताब पेन पेन्सिल के साथ प्राइवेट फार्म भरवाने की कवायद शुरू हुईं।सभी तैयारी के बाद कुंती की पाठशाला शुरू हुई।

स्कूल के बाद जैसे ही काम पर आती बिजली सी फुर्ती से काम निपटा कर कभी बेटियों से कभी मुझसे पढ़ती। उसकी ललक देखकर हमको भी खुशी मिलती। परीक्षा हुई उसकी मेहनत रंग लाई, वह अच्छे नंबरों से पास हुई। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, वह उन्मुक्त पंछी की तरह अपनी राह चुनने का सपना देखने लगी। पर आगे के लिए उसकी माँ तैयार नहीं हुई, कहने लगी कि, " दीदी! अधिक पढ़ने से हमारी जाति में शादी नहीं कर पाएंगे। ज्यादा पढ़ी लिखी लड़कियों को लोग पसंद नहीं करते हैं"। खैर... यह उनका निजी व पारिवारिक मामला था।

कुंती ४ साल हमारे यहाँ काम की, वह घर में पूरी तरह घुलमिल गईं, अनजान लोग उसे मेरी बच्ची ही समझते थे। एक दिन अचानक उसकी माँ हमारे घर आई कहने लगी - "दीदी! अब कुंती आपके यहाँ अब काम नहीं कर सकेगी, हम इसकी शादी कर रहे हैं, मैं लेने आईं हूँ।" पर कुंती नाखुश थी, वह बार बार यही रट लगाई थी कि, "मुझे नहीं जाना है"। मैंने भी उसकी माँ को समझाया कि, कुंती से तो पूछ लो, इसकी मर्जी से ही शादी करो। उसकी माँ ने कहा - "दीदी हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता हैं। हमने तय करदी हैं शादी।" मेरी बेटियाँ उसको छेड़ रहीं थीं कि, अरे कुंती! तेरी तो बड़ी ऐश होंगी गहने, सड़ियाँ मिलेंगें, पर न जाने क्यों कुंती खुश नहीं दिखी।

जाते समय जब मैंने उसे शगुन दिया, गले लग कर रो पडी। बार बार यही कहे जा रही मुझे नहीं जाना हैं। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में थी क्या करूँ समझ नहींपा रही थी? । बहुत भारी मन से हमने कुंती को विदा किया, और कुंती चली गईं..........

समय गुजरता गया इसी बीच हमारे जीवन में भी परिवर्तन हुआ। बेटियाँ पढ़ाई पूरी कर जॉब को चलीं गईं, मैं भी पति के पास इंदौर आ गईं पर कुंती हमारे ज़हन में मौजूद थी। यदा कदा पडौसियों से फोन पर बात होती तो कुछ हाल चाल पता चल जाते थे। धीरे धीरे नज़र से दूर दिमाग़ से दूर होता चला गया सब कुंती के नाना भी दूसरी जगह चौकीदारी करने लगे, फिर तो कोई भी खबर नहीं मिल सकी।

लगभग **8** सालों बाद वापिस आना हुआ कि,

कुंती यादों में फिर ताज़ा हो उठी। हमने भी हलांकि मोहल्ला बदल लिया, पर एरिया वही। एक दिन सब्जी मंडी में अचानक चौकीदार दादा को देख दौड़ कर कुंती कैसी हैं? सबसे पहले सवाल किया। उनका जबाब सुनकर कानों पर विश्वास नहीं हुआ, फिर जो सुना वह पचा नहीं पाई। अपने पति और भाभी से नाजायज संबंधों की भेंट चढ़ गईं कुंती। अपने कलुषित रिश्ते को जिन्दा रखने के लिए दोनों ने मिल कर कुंती को ही रास्ते से हटा दिया।

घर आकर जिसे भी बताया कोई विश्वास नहीं किया। इतनी जीवट, हँस मुख, ज़िन्दगी भरपूर जीने वाली बच्ची का ऐसा अन्त? कुंती वापिस हमारे ज़ेहन में समा गईं। महीनों हम उसका चेहरा, हँसी, बातें भूल न पाए। एकबार फिर मस्तिष्क ने स्मृतियों - विस्मृतियों ने अहम रोल निभाया। कहा भी जाता हैं कि,

SHOW MUST GO ON

दुनियाँ यूँ ही चलती हैं, और चलती रहेगी। भीगी पलकों से विदा..... "अलविदा कुंती"

'कमल चंद्रा'
277, रोहित नगर फेज 1
भोपाल 462039
मोबाइल 9893290596

लघुकथा सौंदर्य बोध

मैंने पत्नी की ओर दवाईयों का बाक्स सरकाते हुए कहा : "सुंदरता जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। तुम सुंदर हो।" वह गर्दन उठा कर मेरी आंखों में झांकने लगी।
मैंने फिर कहा : "साठ की उम्र में तुम चालीस की लगती हो।"
वह बोलीः "आप जो मेरा इतना ख्याल रखते हो।"
"क्या ख्याल रखता हूं?" मैं अनजान सा हुआ।
उसने बी.पी. की गोली निगल कर पानी का ग्लास मेज़ पर रखा और बोली : "मेरे सम्मान का !"

उदय श्री. ताम्हण
भोपाल

सार्थकता

एक नामी संस्था द्वारा महिला दिवस का आयोजन किया जा रहा था। नामचीन और प्रसिद्ध हस्तियों को बुलाया गया। मंच पर महिला सशक्तिकरण विषय पर अपने विचार रखने हेतु उनका नाम पुकारा गया। ब्वॉय कट बाल, जींस टीशर्ट और स्पोर्ट्स शूज पहने हुए महिला ने माइक संभाला और अपनी ओजस्वी वाणी में कहने लगी-महिलाओं अपनी ताकत को पहचानो, और किसी का दवाब न झेलों, पिता, पति, पुत्र और भाई की छत्रछाया से बाहर निकलकर अपना अस्तित्व बनाओ और नारी सुलभ गुणों से बाहर आकर खुद को सजाओ अपनी एक पहचान बनाओ। किसी भी हाल में हम मर्दों से पीछे न रहे। खचाखच भरे पांडाल में तालियों की गड़गड़ाहट गूंज रही थी। महिला दिवस का आयोजन सफल हुआ।

मीडिया ने भी इस अवसर को खूब भुनाया। शाम के समय पूरा परिवार इकठ्ठा बैठा टीवी देख रहा था। इस आयोजन की कुछ झलकियां न्यूज़ चैनल पर दिखाई दे रही थी। पास बैठी उन महिला की सास ने पूछ लिया -क्या महिला दिवस पर हम महिला बनकर महिलाओं को कामयाब बनाने की बात नहीं कर सकते। क्या यह जरूरी है हम पुरुषों की बुराई करके महिला शक्ति को ललकारे? मेरा मानना है कि महिला दिवस पर महिलाएं अपने प्रकृति प्रदत्त गुणो को बचाकर रखे और इसी के साथ तरक्की करे। कमजोर और अबला हो इस लिबास को जरूर उतार फेंके लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि नारी सुलभ वस्त्रों का त्याग कर दे। आगे बढ़ना और तरक्की करना अच्छा हैं मगर अपने मूल स्वभाव को खोकर नहीं।

स्त्री जन्म तो जीवन का जगमगाता उपहार है। इसे पुरुषों की बराबरी करने के चक्कर में जाया ना करें। स्त्री स्त्री बनकर ही अपनी पहचान बनाए महिला दिवस की इसी में सार्थकता है।तभी न्यूज चैनल पर हेडलाइन प्रसारित हई-पुरुष लिबास में महिला ने दिया पुरुषों से बराबरी का नारा।

शोभा रानी गोयल
जयपुर,मोबाइल-9571220372

परछाई

सिग्नल पर गाड़ी रुकते ही अविनाश की नजर लोगों से खचाखच भरी बस पर पड़ी, अरे यह क्या? लगती तो मोना ही है? उसने गौर से देखना चाहा तो वह वहाँ पर नहीं थी। तभी उसके बाएं तरफ की खिड़की बजी उसने पलट कर देखा- अरे ..यह तो मोना ही है। इतने में सिग्नल ग्रीन हो गया और उसे गाड़ी आगे बढ़ानी पड़ी। कुछ आगे जाकर उसने गाड़ी रोकी और उतर पड़ा देखा मोना आ रही थी।

अरे मोना तुम ..तुम मोना ही हो ना ?"

क्यों! इतनी जल्दी भूल गए? अभी तो शायद **5** साल ही हुए हैं।

अरे देखो तो तुमने क्या हाल बना रखा है? इतनी सस्ती सी साड़ी और उस पर सब्जी का थैला और फिर रोडवेज की बस में सफर ।

सब कुछ यहीं सड़क पर पूछ लोगे ?" और वह दरवाजा खोलकर गाड़ी में बैठ गई। अविनाश थोड़ा सा अचकचा गया फिर गाड़ी में बैठते हुए उसने पूछा "मोना क्या हुआ है ? संजय से तलाक हो गया क्या ? तुम्हारे पास तो बहुत बड़ी सी गाड़ी थी।" अचानक मोना सिसकने लगी।

क्या हुआ है कुछ तो बताओ?"

कुछ मत पूछो मेरी तो किस्मत ही खराब है तुम्हें ठुकरा कर मैंने संजय से शादी की थी कि वह पैसे वाला है, उसके साथ जिंदगी आसानी से कटेगी पर शादी के तीन साल बाद ही उसकी फैक्ट्री में आग लग गई । सब कुछ तबाह हो गया, ससुर जी सदमा बर्दाश्त न कर सके और चल बसे। पता चला कि कर्जा बहुत था , इंश्योरेंस का पूरा पैसा कर्जे में स्वाहा हो गया, मकान तक बिक गया। बड़े भैया अपने ससुराल चले गए। रह गए मैं और संजय.. सासूजी तो थी ही नहीं। मेरे मायके के हाल तो वैसे ही बुरे थे। झक मारकर संजय एक स्कूल में टीचर हो गया और मैं बसों में धक्के खाते हुए सस्ती सब्जी और सस्ते सामानों के चक्कर में उलझ गई हूँ ।" मोना एक ही सांस में कह गई और जोर-जोर से रोने लगी। अविनाश चुप रहा आया ।थोड़ी देर बाद वह शांत हो गई ।

कुछ देर बाद बोली, पर तुम्हारा यह कायापलट कैसे ?"

जिस दिन तुम्हारी शादी थी उसी दिन मुझे एक सरकारी विभाग से नियुक्ति पत्र मिला और मैं एक बड़ा अफसर बन गया। अभी दो महीने पहले ही इस शहर में मेरा ट्रांसफर हुआ है ।यहाँ मुझे बहुत बड़ा बंगला मिला है। मेरी तो किस्मत ही चमक गई। अविनाश गर्व से बोला । कुछ रुक कर बोला "चलो मेरा बंगला पास ही है,एक-एक कप चाय हो जाए।"

मोना का चेहरा बुझ गया और एक बेचारगी उसके चेहरे से झलकने लगी। अविनाश ने एक बहुत बड़े बंगले के सामने गाड़ी खड़ी की । झट से दरबान ने गेट खोला और सलाम ठोका , गाड़ी के अंदर आते ही दरबान दौड़ कर आया और कार का दरवाजा खोला और फिर दौड़ कर मोना का गेट भी खोला ।मोना सिकुड़ गई , दरबान के कलफ किए कपड़े , फिर अपनी सस्ती सी गुड़ी मुड़ी साड़ी को देख वह संकोच से घिर गई और ठिठक गई ।

अरे आओ आओ, कहकर अविनाश ने उसका हाथ पकड़ कर गाड़ी से उतारा और अपने बड़े से ड्राइंग रूम में ले गया मोना संकोच से गड़ी जा रही थी। इतने में बड़ी सी ट्राली सजा कर नौकर चाय नाश्ता लेकर आया।बड़े अदब से चाय कप में डाल कर चीनी का प्लेट लेकर पूछा " मैडम कितनी चम्मच डालूं ?"

"दो चम्मच " अविनाश बोला।मोना उसका मुंह देखने लगी। नौकर चाय सर्व करके जा चुका था।

"देखा मैं कुछ भूला नहीं हूँ,सब याद है मुझे ।" अविनाश हंस कर बोला। है।

तुम ने शादी नहीं की अब तक ?

नहीं... तुम्हारी शादी से मायूस हो गया था पर यह सरकारी नौकरी और ऊंचा ओहदा पाकर सब भूल गया । अब माँ मेरे लिए लड़की देख रही हैं,देखो कब होती है।"

माँ कैसी है? मोना ने पूछा।

माँ तो बहुत अच्छी है अब तो मैंने गाँव का मकान भी पक्का करा लिया है जमीन भी छुड़ा ली । माँ ही खेती की देखभाल करती है ।इस साल २० एकड़ जमीन में गेहूं भी बोया है।अविनाश ने खुश होकर बताया।

अविनाश को इतना खुश देखकर न जाने क्यों मोना के दिल के अंदर कुछ दरक गया।

अच्छा मैं चलती हूँ , उसने जल्दी से कहा और उठ कर खड़ी हो गई।

इस तरह अचानक... मैंने कुछ ग़लत कह दिया? बैठो ना तुम से बहुत कुछ जानना है ।" कह कर अविनाश ने उसे हाथ पकड़ कर बिठा दिया।

बता तो दिया सब कुछ ... अगर कुछ मदद कर सको तो . .. मोना ने बात अधूरी छोड़ दी।

अविनाश एकदम चुप हो गया । मोना ने देखा उसके चेहरे पर कई भाव आये और चले गए ।

चलो तुम्हें घर छोड़ देता हूँ ।" कह कर वह दरवाजे की तरफ मुड़ गया। मोना भी चुपचाप उसके पीछे चल पड़ी।

दो तीन दिन बाद अविनाश दफ्तर से लौटा तो मोना सोफे पर बैठी किसी पत्रिका के पन्ने पलट रही थी।

अरे मोना तुम ... यहाँ कैसे ?"

कुछ नहीं अविनाश मैं बहुत बोर हो रही थी । संजय भी जब से टीचर बना है बहुत ही उबाऊ हो गया है। मेरा आज किसी अच्छे से होटल में डिनर का इरादा है चलो जल्दी से फ्रेश हो जाओ हम चलते हैं।"मोना हुलसती हुई बोली। अविनाश सकपका गया।

संजय को भी ले आतीं। आखिर हम लोग दोस्त रहे हैं।"

उसे छोड़ो, मैं ने बताया न कि वह बहुत बोरिंग हो गया है।

फिर भी वह साथ चलता तो ठीक रहता ।

क्यों मेरे साथ अकेले जाने में डर रहे हो... " मोना ने कुछ चिढ़कर पूछा।

नहीं वो बात नहीं है वो घर में अकेला होगा फिर डिनर में देर भी तो हो सकती है। " अविनाश झिझकता हुआ बोला।

कोई देर वेर नहीं होगी वैसे भी वो देर रात तक कॉपियां जांचने में लगा रहता है। चलो ना क्यों बोर कर रहे हो? मोना ने प्रेमिका का सा अभिनय करते हुए कहा।

अच्छा मैं आया ," कह कर वह अंदर चला गया। थोड़ी देर में वे एक आलीशान होटल के सामने थे । मोना खिल उठी।

कितने सालों बाद आज आई हूँ , याद है तुम्हें ... संजय ही तो हमें ऐसी जगहों पर ले जाता था।"

वही तो... आज उसका कुछ कर्जा तो उतार देता।"

ओ! हो! छोड़ो भी... कुछ अच्छा सा आर्डर करते हैं ।" चहकती हुई मोना बोली।

पूरे समय वह बेबात हंसती खिलखिलाती रही ।रात के दस बजने लगे पर वह तो जैसे घर जाना ही नहीं चाहती थी । अविनाश खड़ा हो गया। चलो मोना मुझे सुबह आफिस भी जाना है । जबूरन मोना को भी उठना पड़ा। पर वह थोड़ी खिन्न हो गई। मुख्य सड़क पर ऑटो देखते ही बोली मुझे यही उतार दो मैं चली जाऊंगी। अविनाश भी खिसियाया हुआ था, उसने फौरन गाड़ी रोक दी ,मोना के उतरते ही गाड़ी बढ़ा दी।

अविनाश का मूड बिल्कुल उखड़ चुका था उसे अफसोस होने लगा कि क्यों उस दिन मोना को पहचाना था। उसे उसका आज का व्यवहार बहुत खटक गया था।वह सोचने लगा कि कालेज में किस तरह मुझसे कन्नी काटती थी । मैं इसके पीछे पागल था पर ये हमेशा मेरे जिगरी दोस्त संजय को रिझाने में लगी रहती। संजय बहुत अमीर था हम बचपन से साथ खेले और बढ़े थे ।मेरे पिता तो स्कूल टीचर थे और हमारा गुजारा हो जाता था ।बाकी थोड़े बहुत शौक संजय पूरे कर देता था । संजय को पढ़ने का बहुत शौक था तो पिताजी का चहेता था।

अचानक मेरे पिता की मृत्यु होने से माँ गाँव चली गई। परीक्षा के दो माह ही बचे थे मैं संजय के घर रुका फिर गांव चला गया। वहीं पता चला कि मोना और संजय की शादी होने वाली है । कितना मायूस हो गया था मैंने दुबारा शहर जाने का इरादा ही छोड़ दिया । मेरी किस्मत में यह ठाठदार नौकरी जो लिखी थी।पर संजय के साथ बड़ा बुरा हुआ। उस पर मोना का व्यवहार तो मेरे मन को झकझोर गया। सोचते-सोचते उसकी नींद लग गई।

अगले दिन ही उसे दौरे पर जाना पड़ा। हफ्ते भर बाद जब लौटा तो सेवक ने बताया कि आप के पीछे से मेमसाब कई बार आईं थीं। अविनाश का मन खराब हो गया। अगले दिन ही उसने संजय का पता लगाया और उसके स्कूल जा पहुंचा। काफी कमजोर थका और बीमार लग रहा था। अविनाश उसे देख सकते में आ गया उसे स्वयं के कीमती कपड़ों में उसके सामने शर्म सी आने लगी।

सामने पड़ते ही उसने कहा- संजय मुझे पहचाना ? संजय पहले तो ठिठका ,नजर भर कर देखा पहचान की चमक उसके चेहरे पर उभरी फिर लुप्त हो गई।

दोनों के ही बीच एक झिझक का झीना सा पर्दा तन गया।पहल अविनाश ने ही की -" क्या हुआ संजय पहचाना नहीं !" कहकर उसे बाजुओं में कस लिया। संजय थोड़ा ठिठका फिर उस ने भी उसे कस लिया।

ये क्या हाल कर लिया है तू ने । तुम्हारे कारोबार का क्या हुआ ?" अविनाश ने जाने क्यों मोना से हुई अपनी मुलाकात को छुपा लिया।

मैं तो पूरी तरह बर्बाद हो चुका हूँ ।"संजय ने दुखी हो कर कहा।

चलो कहीं बाहर बैठते हैं ।" अविनाश उसे लेकर बाहर आया जैसे ही कार का दरवाजा खोला तो संजय भौंचक्का रह गया।
अरे ये तेरी गाड़ी है ... "
मेरी नहीं हमारी है... तू कब से मेरी तेरी करने लगा ?"
संजय की आंखें भर आईं
हालात ही ऐसे हैं ...क्या बताऊं ?
चलो छोड़ो " और वे एक होटल के लाऊंज में बैठ गये ।
तफसील से बता हुआ क्या है ।"अविनाश ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर पूछा ।

संजय बताने लगा । अविनाश चुप सुनता रहा। बहुत कुछ तो वह मोना से जान ही चुका था। संजय बताते बताते रो पड़ा । अविनाश ने उसे आश्वस्त किया कि - "तुम चिंता मत करो मेरी बहुत पकड़ है , मैं तुम्हारी मदद करूंगा आज से तुम अकेले नहीं हो तुम्हारा भाई अभी जिंदा है ।"

इसके बाद अविनाश ने दिन रात एक कर दिए । संजय पढ़ा लिखा तो था ही अविनाश की मदद से उसे बहुत अच्छी जगह नौकरी मिल गई। पर मोना का व्यवहार असहनीय होता जा रहा था। वह तो जैसे अविनाश के जीवन में ही दाखिल होना चाह रही थी। अविनाश ने उसे नहीं बताया था कि वह संजय से मिल चुका है, और न ही मोना ने संजय के जीवन में आये बदलाव का जिक्र किया था। वह यदि पूछता भी तो वह टाल जाती।एक दिन मोना शाम को अविनाश के घर पर आई हुई थी । वह उसे देख चौंक उठा।
- "अरे मोना आज बहुत दिनों बाद... कैसे आना हुआ ?"
- "अविनाश तुम मुझे इग्नोर क्यों करते हो ? उस दिन मैं तुम्हें पुकारती रही और तुमने मुझे देख कर भी अपनी गाड़ी बढ़ा दी ।" मोना ने तल्ख लहजे में पूछा।
- "नहीं नहीं ऐसा तो कुछ नहीं है।"अविनाश सकपका गया।
- "आज कल तुम मेरा फ़ोन भी नहीं उठाते हो न ही पलट कर फोन लगाते हो ।" मोना ने कुछ चिढ कर कहा।
- "मैंने सोचा अब तो संजय को बढ़िया नौकरी मिल गई है और वह नया घर भी देख रहा है तो अब हमें मिलने की क्या जरूरत है ?"
- "तुम्हें कैसे मालूम ? तुम क्या संजय से मिले थे ? " मोना ने आश्चर्य से पूछा।
-" क्यों संजय ने तुम्हें नहीं बताया मैंने ही तो उसकी नौकरी लगवाने में मदद की है और हम दोनों ही तो मकान भी तलाश रहे हैं ।"

मोना पर मानो घड़ों पानी पड़ गया। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। उससे कुछ बोलते नहीं बना।
- "मैं सब जानता हूँ तुम संजय से बात नहीं करती हो , तुम्हारा उससे मन भर गया है। उसके पास पहले जैसा न पैसा है न गाड़ी न बंगला, क्यों ठीक कह रहा हूँ ना ? " अविनाश गुस्से से बोला ।
- "मुझे तो संजय ने दूसरी मुलाकात में ही तुम्हारा कच्चा चिट्ठा बता दिया था और ये भी बताया था कि तुम आज कल किसी कार वाले के साथ घूम रही हो तब मैंने अपनी मुलाकात और तुम्हारा रवैया बताया था तो जानती हो उसने क्या कहा -' देखो अविनाश वो तो नासमझ है ये तो अच्छा हुआ कि उसे तुम मिले तुम उसका ध्यान रखना जैसे ही मेरे हालात ठीक होंगे वो वापस आ जायेगी। '

मोना फूट-फूट कर रोने लगी । अविनाश उसे रोते देख चुप हो गया। काफी देर रो लेने के बाद वो थोड़ा सम्भल गई ।
- "अविनाश मुझे माफ़ कर दो... मैं भटक गई थी एक अंधे कुएं की तरफ भाग रही थी मेरी किस्मत अच्छी थी कि तुम मुझे मिले वरना मैं तो कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहती । अच्छा मैं चलती हूँ ।" कह कर उसने अविनाश के पैर छू लिए।
- "अरे अरे ये क्या करती हो ? चलो मैं तुम्हें घर छोड़ देता हूं। " कहकर उसे लेकर चल पड़ा।

मधूलिका श्रीवास्तव
शिवाजी नगर
भोपाल (म.प्र.)462016
मो. 9425007686

शिक्षा में भाषा का महत्व

शिक्षा से संसार चमकता है, युग-युग आगे बढ़ता है ।
अंध-कूप से निकला मानव,कदम चांद पर रखता है ।

हमारे जीवन में किसी भी परिवार में बच्चे के जन्म लेते ही बच्चा जैसे - जैसे बड़ा होता है ठीक वैसे-वैसे मां द्वारा बोली जाने वाली भाषा वह मातृभाषा के रूप में सर्वप्रथम सीखता है और फिर घर के सभी सदस्यों के साथ बातचीत करना सीखता है ।

आजकल तो बच्चा तीन साल का हुआ कि पाठशाला में पढ़ने-लिखने के लिए भेजा जाता है । फिर बच्चा अपने माता-पिता और पाठशाला में पढ़ने-लिखने के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करता है । जिस वातावरण में पालन-पोषण होता है, उसका और आस-पड़ोस के माहोल, भाषा इत्यादि का उसके ऊपर प्रभाव पड़ता है और वही सीखने की कोशिश करता है ।

प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रणाली के तहत सुशिक्षित बनाने हेतु प्रयासरत रहते हैं । इसीलिए भाषा का शिक्षा से घनिष्ठ संबंध है या हम यह कह सकते हैं कि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं । बच्चे भाषा के माध्यम से ही हर प्रकार की शिक्षा ग्रहण करने की कोशिश करते हैं । हमारे भारत देश में ही आप देखिएगा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवेश करते ही भाषा में परिवर्तन आ जाता है और यही भाषा ही हमें एक-दूसरे के साथ से कार्य करने हेतु सहयोग करती है ।

जैसा कि हम सभी जानते हैं भारत विविधताओं का देश है, और भारत में कई भाषाएं बोली जाती है पर यहां पर एक भी भारतीय भाषा नहीं है जो पूरे देश में बहुमत से बोली जाती है। जैसे कि हिन्दी भाषा उत्तर भारत में बहुत प्रचलित है परंतु इसका उपयोग दक्षिण भारत में काफी कम है, इसी तरह दक्षिण भारतीय भाषाएं जैसे तमिल, मलयालम और तेलुगु का प्रयोग उत्तर भारत में बहुत ही कम होता है।

भारत में कुल कितनी भाषा बोली जाती है इसको परिभाषित करना बहुत ही मुश्किल है, क्योंकि यहां पर अनेक भाषाएं ऐसी बोली जाती है जिनमें बहुत ही कम अंतर है और इस अंतर के कारण उन्हें एक भाषा माना जाए या दो या तीन, यह कहना बहुत ही मुश्किल होता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में लगभग 122 भाषाएं हैं, जिनमें से 22 भाषाएं भारतीय संविधान के आठवें कार्यक्रम में भारतीय गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में सूचीबद्ध हैं।

1961 की जनगणना के अनुसार भारत में 1,652 ”मातृभाषा“ या भाषा का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन 1971 की जनगणना के अनुसार केवल 108 भाषाओं को भारत की भाषाओं में शामिल किया गया और उन भाषाओं को हटा दिया गया जिनको बोलने वालों की संख्या 10 हजार लोगों से कम थी ।

वर्ष 2001 और 2011 की जनगणना के अनुसार यह पाया गया कि भारत में 122 भाषाएं हैं जिनको बोलने वालों की संख्या 10 हजार लोगों से अधिक है अतः इस आंकड़े के अनुसार यह माना जाता है कि भारत में लगभग 122 भाषाएं बोली जाती है। भारत में 29 भाषाएं ऐसी हैं उनको बोलने वालों की संख्या 1000000 (दस लाख) से ज्यादा हैद्य

भारत में 7 भाषाएं एसी बोली जाती है जिनको बोलने वालों की संख्या 1 लाख से ज्यादा है। भारत में 122 ऐसी भाषाएं हैं जिनको बोलने वालों की संख्या 10000 (दस हज़ार) से ज्यादा है ।

मेरा उपर्युक्त भाषा का विश्लेषण बताने का उद्देश्य यही है केवल की भाषा की भूमिका इतनी विशाल है कि आप अपने बच्चों को बता सकते हैं कि शिक्षा ग्रहण करने किसी भी स्थान पर जाएं तो वहां की भाषा अवश्य रूप से ही सीखने की कोशिश करें क्यो कि बचपन से ही सीखेंगे तभी तो वे अपना विकास करने में कामयाब होंगे ।

आजकल हम देख रहे हैं कि उच्च स्तरीय शिक्षा प्रणाली के तहत बच्चों को जरूरत पड़ने पर अपनी संबंधित शिक्षा ग्रहण करने, नौकरी या व्यवसाय करने के लिए एक शहर से दूसरे शहर भी जाना पड़ता है, तब बचपन से लेकर आजीविका चलाने तक आपने जो भी शिक्षा या ज्ञान भाषा के माध्यम से प्राप्त किया है, उसी का प्रभाव मिलने-जुलने वाले लोगों पर पड़ता है और जिसका प्रतिफल काम पूर्ण होने के रूप में प्राप्त होकर सफल होता है ।

मैं अपने बच्चों को हमेशा ही कहती हूं कि अपनी पुस्तकों का अध्ययन तो करना ही है पर साथ ही साथ समाचार पत्र तो अवश्य रूप से ही पढ़ना चाहिए । आप जो भी भाषा का अध्ययन करते हैं या ज्ञान रखते हैं, तो उसी भाषा में टीवी पर प्रसारित समाचारों को भी अवश्य देखिए, जितना अधिक ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं तो उतना ही आपका आत्म विकास प्रबल होता है । मेरा तो मानना है कि जहां से भी ज्ञान प्राप्त होता है तो उसे ग्रहण करते रहना चाहिए, क्यो कि शिक्षा का कभी भी अंत नहीं होता है ।

वस्तुतः शिक्षा हमारे अन्तःकरण कोई , चरित्र को शुचिता प्रदान करती है । हमारी प्रतिभाओं को विकसित करने का संबल बनाती है, हममें पूर्ण रूप से विकास लाती है, हमारी सुंदरतम विभूतियों को इस प्रकार संवारती है कि उसमें न केवल हमारा ही अपितु समाज का भी कल्याण हो अर्थात व्यक्ति और समाज के बीच समन्वय स्थापन का कार्य भी शिक्षा के सौजन्य से होता है ।

“विद्यालय की कक्षाओं में भारत देश के भविष्य का निर्माण हो रहा है ।“ अतएव विद्यार्थियों को ऐसी अमूल्य शिक्षा मिलनी चाहिए कि वे अनुशासन एवं शालीन आचरण के साथ-साथ धैर्य, ईमानदारी, सहनशीलता , सद्भावना,निष्पक्षता, कर्त्तव्य परायणता प्रभुति गुणों को आत्मसात कर सकें और इन अर्जित गुणों को लेकर भविष्य में वे समाज में समीचीन ढंग से सम्पृक्त हो सकें ।

इन सभी गतिविधियों में शिक्षक जो है सर्वप्रथम भूमिका निभाते हैं , अतः वे अपनी पाठशाला या विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की रूचि के अनुसार सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं, जैसे अभिनय, संगीत, नृत्य आदि हदयस्थ भावनाओं को जागृत एवं उजागर करने के मुख्य साधन होते हैं । इसके अलावा बौद्धिक एवं रचनात्मक गतिविधियों के आयोजन के प्रति जागरूक होते हुए वाद-विवाद, परिसंवाद, गोष्ठी, तात्कालिक-भाषण, अन्त्याक्षरी, कविता, कहानी, निबंध- लेखन प्रभृति प्रतियोगिताओं का निष्पक्ष मूल्यांकन होना चाहिए । ऐसा करने से विद्या थर्यों में वैचारिक एवं सृजनात्मक क्षमता का वर्धन होगा, जिसके संस्पर्श से शिक्षा सफल व्यक्ति पूर्णकाय हो जाती है ।

एन.सी.सी., स्काउटिंग, राष्ट्रीय-सेवा योजना आदि के द्वारा भी विद्यार्थियों में ऐसी भावनाओं को जागृत एवं उदीप्त किया जा सकता है, जिसके सहारे वह समाज और राष्ट्र से जुड़कर लोक मांगलिक कार्य का सम्पादन कर सकते हैं । इससे उनके चरित्र में सौष्ठव लक्षित होगा तथा लोकोपकारक की मंजुल

छवि उसके व्यक्तित्व में थिरकने लगेगी ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन का निष्कर्ष यही है कि शिक्षा का जो उदात्त उद्देश्य है, वह पाठ्यक्रम सहगामी गतिविधियों के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है । शिक्षा के अभीष्ट उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम का शिक्षण ही यथेष्ट नहीं है, साथ ही साथ सहगामी गतिविधियों के आयोजन की भी नितांत आवश्यकता है और इन सभी में भाषा का अपना अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग महत्व है , जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होती है । ऐसी शिक्षा समस्त विद्यार्थियों को हर स्थान पर उपलब्ध कराई जाएगी तो देश का भविष्य और विद्यार्थीयों का जीवन अवश्य ही उज्जवल होगा ।

सुश्री आरती अयाचित
179, सागर ऐवेन्यू,
अयोध्या बायपास रोड़,
भोपाल-462041
मोबाइल नंबर-9826332698

लघुकथा "सुरक्षा कवच"

"हें! ये क्या है सर ? इस कार की स्पीडोमीटर में मेरी फैमिली फोटो ? माजरा क्या है ?" ड्राइवर रमेश ने आश्चर्यचकित होकर मालिक से पूछा।

"रमेश, आज से ये गाड़ी तुम ही चलाओगे। मेरी सभी गाड़ियों की स्पीडोमीटर में उसके ड्राइवर की फैमिली फोटो लगी होती है।" मालिक ने बताया।

"पर ऐसा क्यों सर ?" रमेश ने जिज्ञासावश पूछा।

"इसलिए कि ड्राइवर हमेशा गाड़ी चलाते समय सतर्क रहें। उन्हें याद रहे कि घर में उनके परिजन उसका इंतजार कर रहे हैं।" मालिक ने समझाया।

"वाह सर! मानना पड़ेगा आपको। क्या खूब दिमाग लगाया है आपने।" खुशी से झूमते हुए रमेश ने कहा।

लघुकथा "जीवन के रंग"

"मां जी,आप ये क्या कह रही हैं?आपको तो सब पता है, फिर भी ?" "हां बहू, मुझे सब कुछ पता है, इसीलिए तो कह रही हूं। तेरा पति सीमा पर शहीद हो गया, इसमें तुम्हारा क्या दोष ? देखो बहू, तुमने अगर अपना पति खोया है, तो मैंने भी अपना एक बेटा खोया है। आज तुम जहां खड़ी हो, २५ साल पहले मैं भी वहीं खड़ी थी। तुम्हें तो पता है कि तुम्हारे ससुर जी भी सीमा पर...।"

"खैर छोड़ो पुरानी बातें, तुम्हारे पेट में हमारे परिवार की तीसरी पीढ़ी आकार ले रहा है। ऐसे में रोना-धोना और उदासी ठीक नहीं। तुम्हारे मम्मी-पापा और मेरे छोटे बेटे रमन से भी मेरी बात हो गई है। अगली बार छुट्टी पर आएगा, तो शुभ मुहूर्त देखकर तुम दोनों की शादी करा देंगे। हम सब चाहते हैं कि हमारा बेबी जब इस दुनिया में आंखें खोले, तो उसके मम्मी-पापा सामने हों। इसलिए आज मैंने होली खेलने के लिए अपनी सभी पड़ोसिनों को भी बुला लिया है।"

ऐसा कहकर मां जी ने अपनी बहू पर ढेर सारा गुलाल लगा दिया। सभी महिलाएं खुशी से मुस्कुरा उठीं और बहु शर्माते हुए पल्लू से मुंह छुपाने लगी।

डॉ प्रदीप कुमार शर्मा
रायपुर, छत्तीसगढ़

महिला सशक्तीकरण

आठ मार्च को पूरे विश्व में महिला दिन धूमधाम से मनाया जाता है,और महिला सशक्तीकरण पर ढेर सारी बातें करते हैं।तब दिल में विचार आया कि क्या सचमुच नारी सशक्तिकरण हो गया है? नारी ना अशक्त है ना पूरी तरह सशक्त है। सशक्त होने की राह पर है। पहले नारी का जीवन कैसे था इसका वर्णन हमें निम्न लिखित पंक्तियों से पता चलता है....

नारी तुम्हारी यही कहानी
आंचल में ही दूध और आंखों में है पानी।

या तुलसीदास की रामचरित मानस में कहा गया है कि

ढोल , गवार, पशु , शूद्र , नारी
सब है ताडन के अधिकारी "

पर धीरे-धीरे समय के साथ स्त्री की स्थिति बदल रही है ।शिक्षा जीवन में प्रगति लाती है । महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए शिक्षा जरूरी है इसलिए नारी शिक्षा शिक्षा का महत्व जानकर महात्मा फुले,सावित्रीबा फुले आदि ने नारी को शिक्षा देने की बहुत कोशिश की ,ब्रह्मोसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध समाज को जागरूक किया। जन आन्दोलन किया उसी वजह से तत्कालीन अंग्रेजी सरकार को सती प्रथा को रोकने के लिये कानून बनाने पर विवश होना पड़ा था। अन्ततः उन्होंने सन् 1829 में सती प्रथा रोकने का कानून पारित किया। इस प्रकार भारत से सती प्रथा का अन्त हो गया।

कुछ समाज में अनेक कुप्रथा प्रचलित है जैसे देवदासी प्रथा।इस प्रथा से भी महिला ओं का शोषण किया जाता है। शिक्षा की वजह से वह तरक्की के पायदान चढ रही है । डॉ बाबासाहेब अंबेडकर जी ने कहा था, "कि यदि किसी समाज की प्रगति के बारे में सही-सही जानना है तो उस समाज की स्त्रियों की स्थिति के बारे में जानो। कोई समाज कितना मजबूत हो सकता है, इसका अंदाजा इस बात से इसलिए लगाया जा सकता है क्योंकि स्त्रियाँ किसी भी समाज की आधी आबादी हैं। बिना इन्हें साथ लिए कोई भी समाज अपनी संपूर्णता में बेहतर नहीं कर सकता है।" इस बात पर सम हमारे समाज का अवलोकन करेंगे तो हमें क्या दिखाई देता है। तब हमें आत्मपरीक्षण करना चाहिए।"

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने ।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यं अर्हति ।

कहकर शुरू में स्त्री के स्वतंत्रता को नकारा गया था लेकिन आज हम देख रहे हैं कि समय बदल रहा है । महिला सभी क्षेत्रों में कार्यरत है।अपने देश की राष्ट्रपति दुसरी बार महिला बनी है, आदरणीय प्रतिभा पाटील पहली महिला राष्ट्रपति थी और अब आदरणीय द्रौपदी मुर्मू राष्ट्रपति है। यह बात बहुत ही गौरवशाली है। स्वगह्य इंदिरा जी गांधी वर्ष 1966 से 1977 तक लगातार 3 पारी के लिए भारत गणराज्य की प्रधानमन्त्री रहीं। मीरा कुमारी,प्रथम महिला लोक सभा अध्यक्ष और सुमित्रा महाजन भारत के सोलहव लोकसभा की अध्यक्ष थ । भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक यानी स्टेट बैंक अ,फ़ इंडिया की प्रमुख अरुंधति भट्टाचार्य थी। दिल्ली उच्च न्यायालय की पहली महिला न्यायाधीश बनने का श्रेय लीला सेठ को जाता है। वे देश की पहली ऐसी महिला भी थीं, जिन्होंने लंदन बार परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया था ।

एवरेस्ट शिखर पर चढ़ाई करने वाली पहली भारतीय महिला है- बछेंद्री पाल।

सशक्त होने का आशय जानना भी जरुरी है, केवल घर से बाहर निकल कर नौकरी

करना या कोईव्यवसाय करना ही सशक्त होना नहीं है। यह भी देखना जरूरी है की वह नौकरी तो कर रही है व्यवसाय भी कर रही है और उसके वजह से अर्थाजर्न कर रही है,अर्थ प्राप्ति भी हो रही है ।पर खुद अपने लिए अपने मन के अनुसार क्या खर्च कर पा रही है ,यह देखना भी बहुत जरूरी है। मैंने बहुत सारी महिला कर्मचारियों को देखा है काम तो करती है लेकिन वेतन मिलने पर पूरा वेतन घर में पिता के या पति के हाथ में थमा देती है और उसने अगर कम पैसे दिए तो उसका पूरा हिसाब भी मांगा जाता है ।यानी उसको सिर्फ नौकरी करने की स्वतंत्रता मिली है पर खुद नौकरी करके कमाए हुए पैसे खर्च करने का उसे अभी कोई अधिकार नहीं है।

दूसरी तरफ अखबार में छपा समाचार याद आया। एक गांव मे कुछ महिलाएं निरक्षर थी,कुछ केवल अक्षर साक्षर थी पर बहुत सारी महिलाएं पती के शराब पीने के लत से परेशान थी। पति दिन भर मेहनत करता है पर सब शराब में उड़ा देता है। उससे सारा परिवार परेशान हो जाता है, इसलिए सब नारी शक्ति इकठ्ठा हो कर उन्होंने शराब का अड्डा तहस नहस कर दिया।और शराब की वजह से होने वाली परेशानियों से छुटकारा पाया।

महिला सशक्तीकरण का यह अच्छा उदाहरण है। नर नारी समान है ऐसा कहा जाता है, पर पढी लिखी होने के बावजूद लड़कियों के घरवालों से शादियों में दहेज लिया जाता है और इतना ही नहीं शादी के बाद भी दहेज के लिए उसे प्रताड़ित किया जाता है और कभी-कभी उससे मारपीट की जाती है सताया जाता है और इससे तंग आकर आए दिन हम दहेज से प्रताड़ित महिला ने खुदकुशी की ऐसे समाचार सुनते हैं।और खुदकुशी करने वालों में पढ़ी लिखी डॉक्टर इंजीनियर पुलिस इंस्पेक्टर टीचर महिला भी है इस बात का भी बड़ा दुख होता है।

अभी भी पेट में लड़की है जांनकर भ्रूणहत्या की जाती है,वही आजकल किसी कारणवश बच्चे गोद में लेना चाहते हैं, बहुत सारे लोग बच्ची गोद में लेते हुए दिखाई दे रहे हैं।अकेली रहने वाली महिला, सिंगल मदर भी बच्ची को गोद लेना पसंद कर रही है। लेकिन इस बात का भी ध्यान रखना जरूरी है इस स्वतंत्रता यानी स्वैराचार नहीं। स्वतंत्रता का सही उपयोग करना जरूरी(है)ना ही दुरुपयोग करना चाहिए।

महिला सशक्तीकरण की राह पर चल रही है। उसका हौसला बढ़ानेकी जरुरत है। महिलाओं के प्रति मानसिकता बदलने के जरुरत है।

सुवर्णा जाधव
पुणे,महाराष्ट्र
9819626647

लघुकथा, चाय कच्ची है

"ये लो चाय।" रमा हमेशा की तरह आज भी कप टेबल पर रखकर खुद चाय पीने लगी। उसे मालूम था थोड़ी देर में प्रतिक्रिया आने वाली है। जैसे, चीनी कम है, बहुत मीठी है, बहुत कड़क है, दूध ही दूध है वगैरह-वगैरह। मतलब नुक्स तो निकालना ही निकालना है। लेकिन आज कुछ देर तक जब कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी तो उसने पूछ लिया "चाय कैसी है ?"

उत्तर में दो टूक "कच्ची है" और होठों पर शरारत भरी मुस्कुराहट थी।

रमा की बरबस हंसी छूट गई। उसने हंसते हुए कहा "जब बाल पक (सफेद) जाते हैं तो धीरे-धीरे स्वाद और शब्द भी कच्चे होने लगते हैं।"

पूनम झा 'प्रथमा'
जयपुर, राजस्थान

'वर्तमान समय में हिन्दू त्योहारों का बदलता स्वरूप

धन्य है वह देश, धन्य है वह प्रदेश, धन्य है वह धरती, और धन्य है वह भारतीय संस्कृति, जहां मानव को उच्च उदार और भगवत भक्त बनाने में सहायक व्रत और त्योहारों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। कालिदास ने उचित कहा है....

'उत्सव प्रियाः खलु मनुष्याः'

सभी को उत्सव या त्योहार मनाना अच्छा लगता है चाहे कोई आस्तिक हो या नास्तिक विद्वान हो या अतिशय मतिमंद या दीन-हीन धनहीन या साधन हीन सभी प्रकार से लोग किसी न किसी आध्यात्मिक, सामाजिक,राजनीतिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक घटनाओं और परंपराओं से जुड़े हुए हैं और उनकी गरिमा महिमा उपयोगिता और आवश्यकता को हिन्दू धर्म स्वीकार करता है।

त्योहार शब्द अपने आप में "गागर में सागर' की भांति बहुत व्यापक है यहाँ 'सात बार नौ त्योहार' का चलन है विक्रम संवत के प्रथम मास चैत्र से यदि आरंभ करते हैं गुड़ी पड़वा, गणगौर व्रत ,शीतला माता का त्योहार ,नवरात्रि का त्योहार, दुर्गा पूजा, रामनवमी, गंगा दशहरा ,नाग पंचमी रक्षाबंधन ,कृष्ण जन्माष्टमी, अनंत चतुर्दशी ,श्राद्ध पक्ष, विजयादशमी, शरद पूर्णिमा, करवाचौथ ,धनतेरस, दीपावली, अन्नकूट , यम द्वितीया, गोपाष्टमी कार्तिक पूर्णिमा संकट चौथ, मकर सक्रांति ,बसंत पंचमी ,महाशिवरात्रि और वर्ष के अंतिम मास में फागुन में होली का उत्सव।

भारतीय त्योहारों का यह सिलसिला लगातार चलता रहता है। लेकिन इनमें से कुछ नाम विलुप्त होते जा रहे हैं विलुप्त होती पेड़ों की प्रजाति और पक्षियों पर अगर कार्य चल रहा है तो विलुप्त होते हुए भारतीय त्योहारों पर भी खोजबीन की जाना चाहिए। आज की वर्तमान पीढ़ी इन त्योहारों की महत्ता और लोक कथा से परिचित नहीं है। वह जितने जोश- खरोश के साथ जन्मदिन और नव वर्ष या क्रिसमस का त्यौहार मनाती है उतने जोश के साथ हमारा नव वर्ष गुड़ी पड़वा उन्हें ध्यान नहीं रहता या चैत्र नवरात्रि वह भूल चुके हैं। यदि हम नव वर्ष से ही आरंभ करें तो 1 जनवरी हमारा नव वर्ष नहीं है यह पश्चिमी सभ्यता की देन है और पाश्चात्य देशों में इसको जिस प्रकार मनाया जाता है वह सब हम भारतीय समाज में कर रहे हैं रात्रि कालीन पार्टियां और शराब की दावत यह आज के त्यौहार मनाने का तरीका है। और बचे कुचे 80-85 वर्ष की आयु पार कर चुके बुजुर्ग जन केवल गुड़ी पड़वा पर थोड़ा एक दूसरे को बधाई दे देते हैं पर नौजवान पीढ़ी इससे अनभिज्ञ रहती है।

गणगौर का त्यौहार या शीतला माता का त्यौहार आज विलुप्त होता जा रहा है शीतला अष्टमी या सप्तमी की पूजा में ठंडा भोजन खाना आज की नौजवान पीढ़ी को मंजूर नहीं। केवल क्षेत्रीय राजस्थान या उत्तर प्रदेश में थोड़ा इसका जोर है महाराष्ट्र और राजस्थान में यह त्यौहार अभी भी काफी उत्साह से मनाया जाता है लेकिन वहीं पर जहां के वरिष्ठ ,बुजुर्ग ना होकर वृद्धाश्रम की शरण में ना चले गए हो।

नवरात्रि या दुर्गा पूजा जितना पवित्र शक्ति संस्कार देने वाला तैयार है ,वर्तमान में उसका स्वरुप चंदा इकट्ठा करना और गरबा खेलना जिसमें गुजरात की नकल करते हुए हर प्रदेश में नवयुवक और नवयुवतियाँ आपस में देर रात तक गरबा खेलते हैं लिव

इन रिलेशनशिप में रहते हुए दुर्घटना के शिकार होते हैं। और महाराष्ट्र और गुजरात का एक आंकड़ा चौंकाने वाला था कि नव रात्रि के समय होने वाले गरबे के पश्चात गर्भपात की संख्या बहुत बढ़ जाती है।

रामनवमी,गंगा दशहरा, नाग पंचमी यह त्यौहार हम भूलते जा रहे हैं नाग पंचमी तो अब केवल आभासी रूप में मनाई जाती है। भारतीय अधिनियम की धारा 428 और 429 भी वन्यजीवों या सरीसृप को पकड़ना अपराध घोषित करती है और इसके लिए 2 वर्ष की सजा का प्रावधान है। विलुप्त होती प्रजाति को बचाने के लिए सपेरे भी जुर्माने के डर से नाग को दूध पिलाने से डरते हैं। समाज में वैसे ही दुष्ट रूपी नाग और भेड़िए के लिए कोई कानून क्यों नहीं बनता। फिर वर्तमान पीढ़ी कैसे जान पाएगी की गंगा दशहरा नाग पंचमी क्या होती है?

रक्षाबंधन मनाने की परंपरा अभी विधिवत् चालू है लेकिन उसका स्वरूप बदल गया है भाई बहन की रक्षा करने के वचन देने के बाद भी अपने वादे से मुकर जाता है। और बहन उसका मुंह मीठा कैडबरी चॉकलेट से ही करवा पाती है। और उसके बदले भी मोटी दक्षिणा का प्रावधान है बेटियों को माता पिता की संपत्ति में बराबरी का हक भी इस त्यौहार की चमक को थोड़ा कम कर रहा है। भाई बहन का पवित्र रिश्ता भी अब व्यवसायिक होता जा रहा है।

कृष्णजन्माष्टमी अनंत चतुर्दशी और श्राद्ध पक्ष 1 दिन में समाप्त हो जाने वाले त्यौहार हो गए हैं आप अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए अगर गया कर आए हैं तो यह केवल श्राद्ध पक्ष की अमावस्या तक ही सीमित हो गया है। कृष्ण जन्माष्टमी केवल वृंदावन और मथुरा में गोपियों के बीच कन्हैया बने आधुनिक कान्हा और गीतों के बीच ही सुनाई देती है।

दीपावली और दशहरा-रामराज्य और रावण का अंत त्यौहार महीने भर तक चलता था और स्कूलों की छुट्टियाँ भी दिवाली के नाम से 25 दिनों की होती थी जो अब चार दिन की चांदनी बनकर रह गई है। रेडीमेड बाजार से मिठाई आ जाती है और लक्ष्मी जी खरीद कर पूजा कर दी जाती है। दीयों के प्रकाश में जो बरसात के बाद कीड़े मकोड़े पनपते थे अब वह मरते नहीं चाइनीज झालरों के प्रकाश में आवारा घूमते रहते हैं। यह सब पुरानी परंपराओं को तरीकों को विस्मृत कर देने के कारण कोरोना जैसी महामारी सुरसा के मुंह के समान फैलती जा रही है । 5 दिन तक चलने वाला यह त्यौहार केवल बाजार की रोनक बनकर रह गया है। वर्तमान पीढ़ी यह जानती ही नहीं है कि रूप चौदस या नरक चौदस क्या होती है? उन्हें तो ब्यूटी पार्लर में सौंदर्य प्रसाधनों पर धन खर्च करना और लिपाई-पुताई कराना ज्यादा हितकर लगता है।

धनतेरस क्यों मनाई जाती है? और भाई दूज जब अम्मा गाती थी....

धर मारो वेरियरा....और बेर की कांटेदार दंडी को मुसल से कुचलती थी तो सच में लगता था कि जैसे हमने भाइयों के दुश्मन को समाप्त कर दिया है ।यमुना नदी में भाई दूज पर नहाने की परंपरा बहन-भाई दोनों भूल गए हैं इसकी कथा सुनाने की आवश्यकता है। यहाँ एक बात को भी स्वीकार करना होगा कि जिन भाई-बहनों को यह परम्परा अभी भी याद है या वह इस निर्वाह करना चाहते हैं, यमुना का दूषित जल देखकर वह इस परम्परा से न चाहते हुए भी दूर हो जाते हैं।

करवा चौथ को जरूर व्यवसायिक रूप से छलनी में चाँद देखना और पानी पीना महिलाएं नहींभूलती चाहे उसके बाद पति से अपने पैर दबा लें, या माथा। पति की लंबी

आयु के लिए किए जाने वाले उपवास और त्योहार वट अमावस्या या वट पूर्णिमा अब केवल निमित्त मात्र की डंडी पूजा में ही सिमटकर रह गए हैं। आंवला नवमी ,वट अमावस्या और शमी पूजा के लिए अब जगह नहीं बची है उनके स्थान पर कंक्रीट के महल खड़े हो गए हैं और बोनसा पौधों की पूजा कर रस्म निभा ली जाती है।

अन्नकूट, यम द्वितीया ,गोपाष्टमी कार्तिक पूर्णिमा पर कोई अवकाश नहीं होता अतः उसके गीत और स्नान का महत्व वर्तमान पीढ़ी क्या जाने? सरकार भी इस पर बंदिश लगा देती है और हम भी इसको व्यर्थ के ढकोसला कहकर छोड़ देते हैं।

संक्रांति पर जरूर तिल के लड्डू भले ही वह बाजार से खरीद कर बनाने का और खाने का रिवाज अभी बाकी है लेकिन सूर्य का मकर राशि में प्रवेश का क्या महत्व है? यह वर्तमान पीढ़ी नहीं जानती। बसंत पंचमी और महाशिवरात्रि लगभग एक साथ ही आते हैं और वैलेंटाइन-डे करोड़ों का व्यापार कर जाता है और हम प्रकृति के संधि काल में वातावरण में जो परिवर्तन होता है और प्रकृति की सुंदरता को निहारने वाला त्यौहार केवल पीले वस्त्र और मीठे पीले चावल खाकर संपूर्ण हो जाता है।

वर्ष के अंत में आने वाला होली का उत्सव फागुन में पानी की कमी, केमिकल रंगों का प्रभाव और नई पीढ़ी को रूप सौंदर्य की सुरक्षा के कारण केवल 1 दिन तिलक लगाकर गले मिलने तक ही सीमित है होलिका दहन क्यों किया जाए ? किससे किया जाए? और प्राकृतिक रंग कैसे बनाए जाएं?यह नई पीढ़ी अभी नहीं सीख पाई है। पानी की बचत के लिए और भी तरीके हैं ? क्या होली जैसे रंगीन त्यौहार पर पानी की बचत करना उचित है? आप पानी को व्यर्थ ना बहाकर नदी तालाबों को स्वच्छ रखिए यह भी पानी की बचत है।

वर्तमान में भारतीय त्योहारों का रंग केवल फिल्मी और व्यावसायिक हो गया है उसमें से भावना सिमटकर राई के बराबर हो गई हैं। हमें चाहिए की वरिष्ठ जन वर्तमान पीढ़ी को लोककथा के माध्यम से इन त्योहारों का महत्व बताएं और 'राई को पहाड़' बनाने में और संस्कृति और संस्कार में धनी भारत हिन्दू राष्ट्र की आवाज को बुलंद कर सके।

हम जानते हैं वर्तमान पीढ़ी जागरूक है प्रगतिशील है उन्नति के रास्ते खोज रही है पर पुरातन त्योहारों को अपने पैरों में बंधी बेड़िया ना समझे हर्ष और उल्लास केवल लक्ष्मी से प्राप्त नहीं किया जा सकता लक्ष्मीपति भी दुखी हो सकते हैं पर हम इन त्योहारों को हँसी खुशी मना कर आनंदित हो सकते हैं।

सुधा दुबे
16 सुरुचि नगर
भोपाल मध्य प्रदेश

धर्म क्षेत्र
बातें हिन्दुत्व की,जानकारी धर्म की
अपने विधान सभा स्तर पर बनें धर्मक्षेत्र के प्रभारी, देश के हर कोने से जुड़े हमारे साथ, करें धर्म सेवा मिल कर करें सनातन सेवा, प्रचार-प्रसार, सनातनी सभ्यता -संस्कृति की रक्षा,जानकारी भरे लेखन करें और अपने क्षेत्रीय लोगो से करायें। बतायें हमें अपने क्षेत्र के पौराणित महत्व के बारे में, वहाँ की विशेष बाते, वहाँ के हस्तकला से बनने वाली वस्तुओं के बारे में। क्षेत्र पर अपने स्थानीय कलाकरों अपने क्षेत्र की प्रतिभाओं का विकास सनातन धर्म के गरीब लोगों को दें रोजगार, घर से काम करने वालों को दे बाजार। बनाये अपने क्षेत्र में '' धर्मक्षेत्र सनातन सेवा सदन''। जानकारी हेतु 945164784 ।
dharmakshetra01@gmail.com https://dharmakshetra.co.in/

गार्बेज ट्रक

कहानी

एक व्यक्ति ऑटो से रेलवे स्टेशन जा रहा था। वह बड़े आराम से ऑटो चला रहा था। एक कार अचानक ही पार्किंग से निकल कर रोड पर आ गई। उसने तेजी से ब्रेक लगाया। ऑटो कार से टकराते-टकराते बचा।

कार चला रहा आदमी गुस्से में ऑटो वाले को ही भला-बुरा कहने लगा जबकि गलती उसकी थी। ऑटो चालक शरीफ आदमी था, वह जानता था कि गलती उसकी न होने के बाद भी इस झमेले में उसका ही नुकसान होगा, क्योंकि कार वाला बड़ा आदमी था और कहा गया कि "समरथ के नहिं दोष गोसाईं" वह कार वाले से क्षमा माँगते हुए आगे बढ़ गया।

ऑटो में बैठे व्यक्ति को कार वाले की हरकत पर गुस्सा आ रहा था और उसने ऑटो वाले से पूछा तुमने उस कार वाले को बिना कुछ कहे ऐसे ही क्यों जाने दिया। उसने तुम्हें भला-बुरा कहा जबकि गलती तो उसकी थी। हमारी किस्मत अच्छी है, नहीं तो उसकी वजह से हम अभी अस्पताल में होते।

ऑटो वाले ने कहा साहब बहुत से लोग गार्बेज ट्रक (कूड़े का ट्रक) की तरह होते हैं। वे बहुत सारा कूड़ा अपने दिमाग में भरे हुए चलते हैं। जिन चीजों की जीवन में कोई ज़रूरत नहीं होती उनको मेहनत करके जोड़ते रहते हैं जैसे क्रोध, घृणा, चिंता, निराशा आदि। जब उनके दिमाग में इनका कूड़ा बहुत अधिक हो जाता है तो वे अपना बोझ हल्का करने के लिए इसे दूसरों पर फेंकने का मौका ढूँढ़ने लगते हैं।इसलिए मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ और उन्हें दूर से ही मुस्कराकर अलविदा कह देता हूँ। क्योंकि अगर उन जैसे लोगों द्वारा गिराया हुआ कूड़ा मैंने स्वीकार कर लिया तो मैं भी कूड़े का ट्रक बन जाऊँगा और अपने साथ-साथ आसपास के लोगों पर भी वह कूड़ा गिराता रहूँगा।

मैं सोचता हूँ जिंदगी बहुत खूबसूरत है इसलिए जो हमसे अच्छा व्यवहार करते हैं उन्हें धन्यवाद कहो और जो हमसे अच्छा व्यवहार नहीं करते उन्हें मुस्कुराकर माफ़ कर दो। हमें यह याद रखना चाहिए कि सभी मानसिक रोगी केवल अस्पताल में ही नहीं रहते हैं। कुछ हमारे आसपास खुले में भी घूमते रहते हैं।

प्रकृति के नियमः यदि खेत में बीज न डाले जाएँ तो कुदरत उसे घास-फूस से भर देती है। उसी तरह से यदि दिमाग में सकारात्मक विचार न भरें जाएँ तो नकारात्मक विचार अपनी जगह बना ही लेते हैं। दूसरा नियम है कि जिसके पास जो होता है वह वही बाँटता है। "सुखी" सुख बाँटता है, "दुखी" दुख बाँटता है, "ज्ञानी" ज्ञान बाँटता है, भ्रमित भ्रम बाँटता है और "भयभीत" भय बाँटता है। जो खुद डरा हुआ है वह औरों को डराता है, दबा हुआ दबाता है, चमका हुआ चमकाता है।

डॉ आरती वाजपेयी
लखनऊ
94522 48080

कहानी

जैसा देश वैसा भेष

"हे शेफाली! गुड महर्निंग! हैप्पी बर्थडे वन्स अगेन! ओह! माय गॉड! स्लीवलेस विथ स्ट्रैप्स वन पीस ड्रेस! यु लुकिंग सो हॉट एंड हैपनिंग!"

"थैंक यू सो मच इशिता!""

"पर आज तू जल्दी ऑफिस जा रही है क्या?"

"नहीं यार! आज बर्थडे है तो सोचा पहले मंदिर हो लूं, वहाँ कुछ देर रुककर वहीं से ऑफिस निकल जाऊंगी।"

"तू ऐसे मंदिर जाएगी तब तो सब भगवान को छोड़कर तुझे ही देखेंगे!" इशिता ने चुटकी लेते हुए कहा।

"अगर सब भगवान को छोड़कर मुझे देखेंगे तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ। चल अब मैं चलती हूँ। बाय।"

पूजा की सामग्री लेकर जैसे ही शेफाली मंदिर में प्रवेश करती है उसे मंदिर के पुजारी टोक देते हैं, "ठहरो! आप मंदिर में प्रवेश नही कर सकती।"

"क्यों नही कर सकती?" शेफाली ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

"आपने अपने वस्त्र देखे हैं? इन वस्त्रों में आप मंदिर में प्रवेश नही कर सकती।"

"आप कौन होते है मुझे मेरे कपड़ो के बारे में ज्ञान देने वाले। मैं कुछ भी पहनूं मेरी मर्ज़ी। मैं जो चाहूँ वो पहन कर भगवान की पूजा करूँ, आप कौन होते है मुझे रोकने वाले? भगवान पर सिर्फ आपके हक़ नही है, भगवान हम सब के भी है।"

"देखिए देवी जी! न तो मैं आपको कोई ज्ञान दे रहा हूँ और न ही भगवान पर हक़ जता रहा हूँ। आप पूरी तरह स्वतंत्र है कुछ भी पहनने के लिए, लेकिन मैं इस मंदिर का पुरोहित हूँ और मैं आपको इन वस्त्रों में मंदिर में प्रवेश की अनुमति नही दे सकता। इसीलिए अच्छा होगा आप बिना हंगामा किए यहाँ से चली जाइये, और यदि आपको पूजन करना है तो कृपया हमारी संस्कृति के अनुरूप वस्त्र धारण कर के आइए।"

"अरे क्या हुआ शेफाली? तू वापस क्यों आ गई और इतने गुस्से में क्यों है?" रूम में शेफाली को गुस्से में तमतमाते हुए आता देख रूममेट इशिता ने पूछा।

"पूछ मत यार! वो मंदिर का पुजारी, अपने आप को समझता क्या है? मुझे कहता है कि मैं इन कपड़ो में मंदिर के अंदर नही जा सकती, और अगर जाना है तो कपड़े बदल कर आओ नही तो वो मुझे अनुमति नही देगा! अनुमति माय फुट!"

"तो कोई बात नही शेफाली। तू कपड़े बदल के चली जा।"

"मैं क्यों उसकी घटिया सोच के कारण अपने कपड़े बदलूँ? वो उस मंदिर में नहीं आने देगा तो क्या हुआ? और भी मंदिर है, सबमें तो जाने से नही रोक सकता ना?"

"हाँ और भी मंदिर है शेफाली,लेकिन उन्होंने जो कहा वो गलत तो नही है!"

"तू भी इशिता? उसकी साइड ले रही है!"

"मैं किसी की साइड नही ले रहीं हूँ शेफाली। तू खुद जरा ठंडे दिमाग से सोच और बता कितने सारे ऐसे पब और क्लब है जहाँ पर इंडियन ड्रेसस अलाउड नही है फिर भी तू उनके रूल के अकॉर्डिंग ड्रेसअप होती है। ऑफिस में फहर्मल कपड़े का रूल होता है उसे भी तू फॉलो करती है।

गुरुद्वारे में बिना सिर ढके अंदर जाने नही दिया जाता तो उसे भी तू मानती है। जब इन सब जगह तू बिना कोई प्रश्न किए सब मान लेती है तो फिर तुझे आज पुजारी जी की बात से प्रॉब्लम क्यों हो रही है? हमें जगह और परिस्थिति के अनुसार ही अपनी वेशभूषा रखनी चाहिए। इसीलिए तो कहा जाता है जैसा देश वैसा भेष! चल अब गुस्सा छोड़, मैं अलमारी से तेरे लिए एक बढ़िया-सी सलवार कमीज निकाल रहीं हूँ। जल्दी से तैयार हो जा, फिर मैं भी तेरे साथ मंदिर चलती हूँ।"

शेफाली कपड़े बदलकर आती है और दोनों मंदिर चल देते हैं। "पंडित जी! ये मेरी दोस्त हैं शेफाली। आज इसका बर्थडे है। इसके नाम की पूजा कर दीजिए।"

"जरूर बिटिया।" पुजारी जी ने मुस्कुराकर कहा।

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात – 360007

रेखा दुबे की ग़ज़ल

गम - ए - उल्फत की
कहानी देखते जाओ
किसी की खाक में मिलती
जवानी देखते जाओ

छलकती जाम से नफरत
गटागट लोग पीते हैं,
यहां मान की आंखों में
पानी देखते जाओ।।

विचारों के प्रदूषण.ने
जमाने को जलाया है।
अदब की लाश जलती है
निशानी देखते जाओ।।

गलत को जो गलत कह दो
बनोगे आंख की किरकी
हवा का रुख बदलने को
कहानी देखते जाओ।।

हमें हर दम किया घायल
मसीहा बन फरिश्तों ने,
खड़ी रोती यहां रेखा
दीवानी देखते जाओ।।

हास्य कविता

एक विदेशी महिला
हिंदी सीखने की आकांक्षी
मेरी मित्र बन गई ।
हिंदी सीखते सीखते
संस्कृति और साहित्य
की भी शौकीन बन गई।

ज्ञान की पिपासा ,
उन्हें एक दिन
मेरे घर तक ले आई,।
माँ ने मेरे भोजन के साथ,
लगा दी उनकी भी थाली ।
वे थोड़ा झिझकीं ,
फिर धीरे से उन्होंने थाली
अपनी ओर खींच डाली ।

उनको झिझकता देख,
मां बोली "खाइए, खाइए।
शर्म न कीजिए ।"
बीच में हाथ रुका देख,
मां ने दूसरा जुमला सुनाया
"खाओ न, खाने में शर्म कैसी?"
खाना उन्होंने भरपेट खाया
जो,उनको था भरपूर भाया।

जाते-जाते, दूसरे दिन
अपने घर पर भोज का निमंत्रण
उन्होंने मुझे और मेरी
मां को दे डाला ।।
उन्हें पसंद आ गये थे,
मां के वाक्य ,
जिनको उन्होंने कईई बार
हमारे सम्मुख ही रट डाला।।

दूसरे दिन उनके घर
हम भोज पर गए ।
सैंडविच और पिज्जा के
अंदाज थे कुछ नए ।
मां ने उन्हें देख
थोड़ा सा, मुंह बिचकाया।।

उनको तुरंत मां का कहा
वाक्य याद आया ।
मां ने जैसे ही बनाया
सैंडविच का पहला निवाला
उन्होंने तुरंत वह वाक्य
ब्रह्मास्त्र की तरह निकाला ।
कुछ भूल गई या
जल्दी में बोल पड़ी वो,

"खाइए खाइए,
शर्म तो है नहीं ।"
फिर बनाने लगी
पिज्जा का नया निवाला।
जिसे मुझे देकर, उन्होंने
मुझे भी धो डाला ।
प्यार से कहा
"खाइए न,
आपको भी शर्म नही है ।।"

बृजबाला दौलतानी,
आगरा

-

शोधपत्र

नारी सशक्तिकरण : तार सप्तक की कवयित्रियों के कविता में स्त्री-विमर्श- डॉ माया दुबे, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तावना- विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के निर्माण में स्त्री का योगदान महत्वपूर्ण है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति एवं सभ्यता के विरमान में स्त्री की भूमिका नि:संदेह अग्रणी है। भारत में स्त्री को देवी के रूप में पूजा जाता था, ईश्वर की कल्पना अर्धनारीश्वर के रूप में हैद्य स्त्री की महत्ता माँपत्नी, भगिनी, बेटी सभी रूपों में महत्वपूर्ण है। प्राचीनकाल में स्त्री कोशिक्षा एवं वर चुनने का अधिकार था। उपनिषदों में स्त्री शिक्षिकाओं काभी वर्णन है, इन्हें उपाध्याया कहा जाता था। (1) वैदिककाल में स्त्री-पुरुषको सामान अधिकार प्राप्त थे। (2) भारत में पर्दा प्रथा नहीं था, सामजिक उत्सवों और जन सभाओं में भी स्त्रियाँ उपस्थित होती थी उनका स्वागत होता था। (3) राजकुल की स्त्रियाँ ज्ञान-विज्ञान और ललित कला में प्रवीण होने के साथ युद्ध कला में भी सिद्धहस्त थी। लेकिन धीरे-धीरे भारत के विविध शासकों के आगमन तथा सांस्कृतिक उथल-पुथल का असर स्त्री के ऊपर भी पड़ा। पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, बालविवाह, इत्यादि कुरीतियाँ आ गईं जिसका नारी के ऊपर भी प्रभाव पड़ा, आर्थिक रूप से भी कमजोर हुई, शिक्षा का भी आभाव हुआ।

कई कुरीतियों के आगमन से नारी सशक्तिकरण की जड़ें कमजोर हो गयी। समाज में स्त्री की स्थिति बद से बदतर होती गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई अधिनियमों के माध्यम से धीरे-धीरे नारी सशक्तिकरण हो रहा है, आज पूरे विश्व में नारी की दशा एवं दिशा में बदलाव आया है। तारसप्तक की कवियित्रियों के कविता में स्त्रीविमर्श- स्त्रीविमर्श एक बहुत बड़ा एवं जटिल विषय हैद्य इतिहास, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, समाज सभी में स्त्रियों का योगदान हैं, उनके योगदान को देखते हुए सम्पूर्ण आयोगों का अवलोकन आवश्यक है, तभी स्त्री सशक्तिकरण या विमर्श को समझा जा सकता हैद्य जहाँ तक तारसप्तक का प्रश्न है तो यह हीरानंद सच्चिदानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित काव्य संग्रह हैद्य अज्ञेय नयी कविता के आधार स्तम्भ कवि हैंद्य इन्होने चार तारसप्तक प्रकाशित किये-

1. तारसप्तक - 1943
2. दूसरा तारसप्तक - 1951
3. तीसरा तारसप्तक - 1956
4. चौथा तारसप्तक - 1976 में । पहले तारसप्तक में किसी स्त्री लेखिका को स्थान नहीं मिला। परन्तु दूसरे में शकुन्त माथुर, तीसरे में कीर्त चौधरी तथा चौथे में डॉ सुमन राजे को स्थान मिला। प्रयोगवादी कवि होने के कारण अज्ञेय जी ने नारी संवेदनाओं को नारी के द्वारा ही साहित्य के माध्यम से हिन्दी जगत तक पहुँचाने का प्रयास किया है। तारसप्तक से पूर्व भी नारी विमर्श पर काव्य रचनाये होती रही हैं। शकुन्त माथुर का काव्य संग्रह 'चाँदनी चूनर' तथा 'अभी और कुछ' प्रकाशित हैद्य सभी नारी संवेदना एवं नारी विमर्श पर मुखर हैं। डॉ सुमन राजे भविष्य के प्रति सजग हैं, कहती हैं-" मैं दिया नहीं जला सकती । पर दीपक रागिनी तो गा सकती हूँ।"(4) दूसरे सप्तक में शकुन्त माथुर अपने वक्तव्य में कहती हैं- 'नारी का सुख उसके घर-गृहस्थी तक सीमित नहीं है, यह मैं नहीं मानती। गृहस्थी के साज-सँवार के बाद भी वह ज्पूरा संतोष नहीं कर पाती, उसे लगता है जैसे वह है। (5) और अंत में अपने वक्तव्य में शाकुंत माथुर कहती हैं वह महिला सशक्तिकरण की जीवंत अभिव्यक्ति है- "कविता जीवित हो, अर्थात वह जीवन के वास्तविक वातावरण और परिस्थितियों की जमीन पर जन्म ले, इसी में उसकी पूर्णता है, और अब स्त्री दृष्टिकोण के सहारे मैं आगे बढूंगी।"(6) शकुन्त माथुर की 'डर लगता है' कविता के भाव महिला सशक्तिकरण में नारी के आगे बढ़ते पाँव को किस भावना से डर लगता है,सुन्दर अभिव्यक्ति है

-मधु से भरे हुए मणि-घट को
खाली करते डर लगता है।
जिसमें सारा सिन्धु समाया
मेरे छोटे जीवन भर का
दूजे बर्तन में उड़ेलते,
एक बूँद भी छिटक न जाए,
कहीं बीच में टूट न जाये,
छूने भर से जी कंपता है।“

(7)शकुन्त माथुर की दूसरा सप्तक में संकलित यह कविता नारी सशक्तिकरण में आने वाले परेशानियों, भावनात्मक डर का सुन्दर चित्रण करती है। इसी प्रकार –

”भरी है जीवन,झूठे बोझों से
जो नहीं छूते हैं,जरा भी जीवनद्य“(8)
तथा- सुबह में सांझ में है,
घुल रहा यह रक्त का सूरज’(9)

स्त्री भी घुल रही, सुबह-शाम चलती है, एक नया आसमान तलाश रही,
जहाँ उसकी प्रतिष्ठा होद्य

तीसरा तारसप्तक की स्त्री कवयित्री कीर्ति चौधरी हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में स्त्री के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है

“अस्तु, यह कहना शेष है कि जिस भांति असुंदर स्त्री का प्रसाधनो की सहायता से अपने को सुन्दर दिखने का प्रयत्न करना अशोभन जान पड़ सकता है, उसी प्रकार यदि पंगु कविता अपने को व्याख्या की पंगु वैशाखी पर टिकने का व्यर्थ उद्योग करे तो कुछ लोगों को हंसी आ सकती हैद्य यह बात दूसरी है कि असुंदर स्त्री या पंगु कविता को अपने-अपने लिए उद्यम करने का पूरा अधिकार है, और कुछ ऐसे होंगे ही जो इन दोनों को सहानुभूति दिखाये।“(10) यहाँ कीर्ति चौधरी का स्पष्ट मंतव्य है कि नारी को सशक्त होना चाहिए न कि सशक्तिकरण का दिखावा हो, किसी की सहानुभूति से कोई अपना स्थान हासिल नहीं करता, निरंतर चलने से ही मंजिल मिलती है, उनकी कवितायेँ इस सशक्तिकरण की उर्जा से भरी हैं। वे कहती हैं-

’दिन चढ़ा, दोपहर ढल आई
वह धीवर की कन्या
डलियों में,
जाल मछलियाँ संग लिए वापस आई।(11)यहाँ काम करती नारी उसका आर्थिक उन्मुखीकरण का सुन्दर उदाहरण है। आर्थिक स्वतंत्रता से ही नारी सशक्त हो सकती है, इसके लिए अर्थोपार्जन आवश्यक है। वे आगे कहती हैं-

”जो कभी अशुभ से नहीं मिले।
काँटों से भरे राह-वृन्तों पर नहीं खिले।।
जीवन के केवल विजय पाहुने,
आखिर बतलायेंगे भी क्या?
असफलताओं से लड़ने,
गिरने पर थमने की
युक्ति जताएंगे भी क्या?“(12)

सचमुच महिला सशक्तिकरण की रह काँटों भरी है, उठाना-गिरना ये जीवन क्रम हैद्य कीर्ति चौधरी असफलताओं के आगे कहीं सफलता को ढूँढती हैद्य इस प्रकार सकारत्मक सोच से युक्त महिला लेखिका है। इसी प्रकार ’लता-3’ कविता में उनके भाव दृष्टव्य हैं-

’नाहक ही मेहनत गयी दिन दो दिन की द्य
रक्खा तो जतन से था,
चाहा भी मन से था,
कूड़े पर उगी थी...
थाम चम्पक करो में
एक गमला सजा दिया।’ (13)

बहुत ही सुन्दर भावयुक्त कविता । इससे कीर्ति जी के मनोभावों का सुन्दर उद्घाटन होता है। ’सीमा रेखा’ कविता में कवयित्रि के मनोभाव महिलाओं के आंतरिक सोच को उद्घाटित करते हैं- ’नभ के कोने में एक सितारा काँपा,
मुझको लगा कि हाँ,
हर चीज कभी तो
यों ही ऊपर चमकेगी।
निस्तब्ध नहर का पानी
कंकड़ से काँपा,
मैंने जाना-
कम से कम जड़ता एक बार में सिहरेगी।’(14)

यहाँ महिला के मन की शंका, प्रयास तथा

अनुभव का सुन्दर चित्रण है। सशक्तिकरण के लिए प्रयास बहुत महत्वपूर्ण है, कीर्ति जी ने सुन्दर बिम्बों के द्वारा महिलाओं के बदलते सन्दर्भ एवं दिशा को रेखांकित किया है। कवयित्री 'अमृत' लाने संकल्प करती है-

उज्जवल है, उज्जवल लेंगे, उज्जवलतर देंगे।
मानिक मुक्ता बोयेंगे, जी भर काटेंगे।
करने दो मंथन उनको यदि बड़ा चाव है।
अमृत तो हम लायेंगे, सबको बाँटेंगे।"(15)

नारी सशक्त है, ये सोच लेखिका कि दृढ़ है, अमृतत्व कि संवाहिका तथा कल्याण कि समर्थक है, नारी ही नारायणी है। नारी सशक्त है- प्रस्तुत कविता में कहती है-

मैं प्रस्तुत हूँ। इन कई दिनों के चिंतन एवं संघर्ष के बाद।
यह क्षण जो अब आ पाया है,
उसमें बंधकर मैं प्रस्तुत हूँ।
यह प्रस्तुति ही सशक्तिकरण का आधार स्तम्भ है।

कवयित्री को उस दिन कि प्रतीक्षा है, जब एक सशक्त नारी कह उठेगी

"करुँगी प्रतीक्षा अभी।
दृष्टि उस सुदूर भविष्य पर टिका करद्य
फिर करुँगी काम,
प्रश्न नहीं पूछूंगी,
जिज्ञासा अंतहीन होती है,
आएगा भविष्य कभी।"(16)

एक भविष्य कि आस है, जहाँ दृष्टि टिकी हैद्य इन्ही संभावनाओं को इस कविता में तलाश रही है। 'केवल एक बात' कविता में कहती है-

"केवल एक बात थी
कितनी आवृत्ति,
विविध रूप में करके
निकट तुम्हारे कहीं।
फिर भी हर क्षण,
कह लेने के बाद,
कहीं कुछ रह जाने की पीड़ा बहुत सही।"

स्त्री अस्मिता एवं स्त्री चेतना से इनकी लेखनी सशक्त रही, 'स्वयंचेत'
कविता में स्वयं कहती है-

'घाव तो अनगिन लगे,
कुछ भरे, कुछ रिसते रहे,
कुछ कफ़न ओढ़े,
किरन से सम्बन्ध जोड़े।
कुछ सिन्धुवाणी में समाये
इस तरह हँस रो चले हम'

स्त्री के मनोदशा, संवेदना को व्यक्त करती सुन्दर बिम्बों का कवयित्री ने निर्माण किया हैद्य घाव भरते-रिसते रहने के माध्यम से स्थितियाँ चौथे सप्तक का प्रकाशन 1979 में हुआ। इसका नाम 'चौथा सप्तक' है, इसके कवि निम्न हैं-

(1) अवदेश कुमार (2) राजकुमार कुंभज (3) स्वदेश भारती (4) नंदकिशोर आचार्य (5) सुमन राजे (6)श्रीराम वर्मा तथा (7) राजेंद्र किशोर'।
इस सप्तक कि एकमात्र कवयित्री सुमन राजे है। इनका जन्म 23 अगस्त, 1938, उत्तरप्रदेश में हुआ। इन्होने साहित्यिक आन्दोलन 'नारीवाद' में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' तथा साहित्येतिहासः संरचना और स्वरुप । इन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय से पी. एच.डी. तथा कानपूर विश्वविद्यालय से डीलिट् कि उपाधि प्राप्त कि।
26 दिसंबर को 2008 में निधन हुआ।
सुमन राजे न केवल कवयित्री वरन एक इतिहासकार, अन्वेषक, दार्शनिक एक समाज सुधारक थी। महिला सशक्तिकरण कि समर्थक तथा महिलाओं के लिए बहुत कार्य किया। 'सपना एवं लाशघर' 'उगे हुए हाथो के जंगल', 'यात्रादंश', एरका', इक्कीसवीं सदी का गीत' प्रमुख कविताये हैं। सुमन राजे नारी संवेदना पर कहती हैं- "अदालत अगर इजाजत दे,
तो कुछ अपनी बात भी कहूँ,
आखिर नारी होकर,
नारी होने को कब तक सहूँद्य
आप ही न्याय करें हुजुर
जब समझ का ???????
धारदार चाकू की नोक की तरह,
औरत की जिस्म में
उतारा जाता हो।" (17)

डॉ सुमन राजे ने नारी सशक्तिकरण पर तथा नारी

अस्मिता पर लेखनी
चला। नारी संवेदना को इस तरह व्यक्त करती हैं- ”जो जीवन हमें जीने के लिए मिला है, उसकी अनिवार्य नियति है-
’निरंतर जुभती हुई जूते कि कील, हर कदम वह कील जूते को जर्जर करता है, और जख्म को गहराता जाता है। किन्तु चलना ही तो हमारा अस्तित्व है। पैरों और पैरों में कोई भेद नहीं होता इस लिए सबके जख्म भी एक होते है। उन जख्मों के आसपास पकती है और फूटती है कविता। कविता अपने शरीर से नहीं अपनी आत्मा से जीवित होती है। नारी की अपनी जिन्दगी की दास्तान हर मोड़ पर कुछ न कुछ चुभती हुई उसके जख्मों को नासूर बनाती हई आगे बढती है। “(18) इस प्रकार राजे महिला सशक्तिकरण का खुलकर समर्थन करती है। उनका मानना है कि स्त्रियाँ भी पुरुषों कि तरह कविता कर सकती है। ज्ञान का संस्कार आत्मा से होता है। प्राचीन काल से नारी सशक्तिकरण के लिए प्रयास रत हैं।

उपसंहार- इस प्रकार नारी सशक्तिकरण कि दृष्टि से तारसप्तक की स्त्री कवयित्रियों के कविता में नारी विमर्श को देखा जाय तो वह सभी में मिलता है। तारसप्तक में कोई स्त्री कवयित्री नहीं है, जबकि दूसरे, तीसरे एवं चौथे में क्रमशः शकुन्त माथुर, कीर्ति चौधरी तथा डॉ सुमन राजे हैं। इनकी कविताये मानवीय धरातल पर नारी संवेदना को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। डॉ सुमन राजे ने नारी विचारों से मुक्ति संघर्षो का उद्घाटन किया है। महिला लेखन अपने लेखों के माध्यम से रक्तहीन क्रांति का सूत्रपात कर रही है। प्रत्येक वर्ग की महिला का सशक्तिकरण में योगदान होता है। संसार की आधी आबादी नारियों की है, फिर भी मुक्ति के लिए संघर्ष चल रहा है। इन स्त्रियों में अपनी कलम से चेतना जगाकर सशक्त एवं समृद्ध बनाना ही इन महिला लेखिकाओं का उद्देश्य रहा है।

सन्दर्भ सूची-

1. पातन्जलि का महाकाव्य - 4/1/49
2. ऋग्वेद - 5/61/8
3. अथर्ववेद - 2/36/1
4. यात्रादंश, सुमन राजे पृ. 32
5. दूसरा सप्तक, संपादक- अज्ञेय पृ. 44
6. वही -------------------- पृ. 45
7. दूसरा सप्तक- संपादक अज्ञेय ’डर लगता है’ शकुन्त माथुर पृ. 52
8. वही ----------- जिन्दगी का बोझ, पृ.53
9. वही -----------ताज़ा पानी, पृ. 57
10. तीसरा तारसप्तक – वक्तव्य, कीर्ति चौधरी, पृ.47
11. वही -------- पृ.52
12. तीसरा तारसप्तक–आवाज, कीर्ति चौधरी, पृ.52
13. वही --------------------- पृ. 55
14. वही --------------- अनुभव, की त चौधरी, पृ. 56
15. वही --------------------- पृ. 59
16. वही -------------, प्रतीक्षा, कीर्ति चौधरी पृ. 74
17. चौथा सप्तक – अज्ञेय, पृ. 85
18. यात्रादंश - सुमन राजे, पृ. 1

बाल कहानी

प्यारा जीवन'

आज पिंकी का बर्थडे था आज वो बहुत खुश थी उसने अपने सारे फ्रेंड्स को बुलाया था और उसको बहुत सारे गिफ्ट मिले थे पर उसके चाचा की भेजी हुई जादुई परी उसे बहुत अच्छी लग रही थी

पिंकी को पढ़ना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था और उसे अपने जीवन से बड़ी शिकायत थी।पिंकी को चिड़िया जैसे उड़ना अच्छा लगता था क्योंकि उसे पढ़ना भी नही पड़ता था और तो और... उसे डॉगी का जीवन भी अच्छा लगता था बस इधर से उधर घूमो और जब जी चाहे सो जाओ।

थोड़ी देर बाद जब सारे दोस्त चले गए अरे ये क्या.? परी तो पिंकी से बात करने लगी बताओ "पिंकी तुम्हे उड़ने वाले पक्षी में सबसे ज्यादा कौनसा पक्षी पसंद है?" पिंकी ने कहा "मुझे तो गौरया बहुत अच्छी लगती है उसको तो पढ़ना भी नही पड़ता और आराम से उड़ती फिरती है। मैं तो गौरया बनना चाहती हूं"।

परी ने कहा "बस इतनी सी बात पर एक शर्त है कि मैं तुम्हे दो घंटे के लिए गौरया बनाऊंगी"। ये क्य पिंकी तो गौरया बनकर खूब फुदकने लगी पर थोड़ी देर बाद उसे भूख लगी और प्यास के मारे गला सूखने लगा उसने चारो ओर नजर दौड़ाई उसे ना पानी मिल रहा था और ना ही कहीं पर खाना । पिंकी की आंखों से आंसू आने लगे पर तभी...।एक बड़ा सा पक्षी जिसकी लाल आंखें और बड़ी नुकीली चौंच थी उसकी ओर झपटा उसने डर के मारे आंखे बंद कर ली पर देखा तो वह परी की आगोश में समा गई थी ।

अब परी ने कहा बताओ " अब तुम क्या बनाना चाहती हो ?" पिंकी ने कहा "मुझे लगता है सबसे मजे से तो डहगी रहता है बस इधर उधर घूमते रहो। मुझे डॉगी बना दो"। परी ने पिंकी को झट से डॉगी बना दिया।

पिंकी बड़ी खुश थी वह बार बार अपनी पूंछ इधर उधर घुमा रही थी पर तभी दो चार डॉगी उसके पास आये और उसे काटने को दौड़े वह जोर से गिरी और चिल्लाई । तभी पिंकी की मम्मी आई और कहने लगी" क्या हुआ बेटा कोई बुरा सपना देखा क्या ? पिंकी ने कहा "मम्मी अब मैं आपका सारा कहना मानूंगी और खूब पढ़ाई करूंगी और मुझे अपना जीवन सबसे प्यारा है" । मां ने पिंकी को प्यार से गले लगा लिया

चित्रा चतुर्वेदी
भोपाल

जीवन शैली

अभी कोरोना काल को बीते लंम्बा समय हुआ भी नहीं कि हम फिर उसी रंग में ढल गये जिस रंग में हम कोरोना काल के पूर्व थे। कारोना से पूर्व भौतिक जीवन, पश्चिमी व्यंजन हमारे जीवन का हिस्सा बन चुका थे। परन्तु वर्ष २०२० में आये कोरोना नामक वायरस के कारण जब हम घरों में बंद हुए तो हमें अपनी भारतीय सभ्यता-संस्कृति बहुत याद आई।

घरों में टी०वी० पर कोरोना के भयानक आकड़े देखने से डर लगने लगा। पश्चिमी गाने एवं वर्ष २००० के बाद आई फिल्में हमें उबाऊ लगने लगी। हम फिर से दादा-दादी की कहानी की तरफ लौटने लगे। पति-पत्नी के बीच मोबाइल से हट कर वार्तालाप होने लगा। परिवार के सगे-संबंधियों से बातें होने लगी। चारों तरफ आधात्म की बातें होने लगी। बच्चों को रामायण और महाभारत दिखाने पर बल दिया जाने लगा।

आलमारीयों में रखें महँगीं सूट-साड़ीयाँ-गहने हाथ न लगता देख सोचने लगे कि हम हैं भी या नहीं, एक साड़ी एक सूट में कई-कई दिन कटने लगे।

बर्गर, पिज्जा, मोमोज, पास्ता और चाउमीन की जगह हमारे रसोईघरों से पूड़ी-कचौरी, साग, पनीर, दूध-दही की खुशबू आने लगी। अंग्रेजी दवाओं की जगह पूरा विश्व भारतीय चिकित्सा पद्धति को स्वीकार कर लिया। काढ़ा और आर्युदिक दवाएं प्रयोग होने लगी। पर्यावरण में शुद्ध हवा बहने लगी। गंगा का पानी बिल्कुल नीला हो गया। सहारनपुर से हिमालय की चोटियाँ नज़र आने लगी। गर्मी के मौसम में पारा अधिक ऊँचाई पर जाने को तरस गया।

एक बार फिर वक्त ने करवट बदला। कोरोना का भय लोगों में खत्म होने लगा। जैसे-जैसे कोरोना का जाने लगा, हम वापस पश्चिमी सभ्यता, खान-पान, पूँजीवाद के तरफ लौटने लगे। पर्यावरण को दूषित करने लगे, भारतीय चिकित्सा पद्धित को नकारने लगे। दादा-दादी की कहानीयाँ नाते-रिश्तेदार, हमारे व्यंजन फिर से खो गये।

अब ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या कोरोना काल में हुआ बदलवा केवल मौत के डर से था या फिर हमारी मजूबरी थी जो हमें प्राचीन जीवन शैली जीने को विवश कर रही थी। जो भी था, बहुत दिनों के बाद हमने भारतीय जीवन शैली को न सिर्फ नजदीक से देखा बल्कि उसे जीया भी।

मैं तो चाहती हूँ कि कोरोना तो ना लौटे मगर हमारी प्राचीन भारतीय जीवन शैली दुबारा हमें मिल जाये, जो पश्चिमी सभ्यता से बहुत अच्छी थी बुहत प्यारी थी ।

सरिता सिंह
भागलपुर

बेटी की डोली

नवंबर माह की गुलाबी ठंड से मौसम खुशनुमा हो रहा था ।एसे में स्वर्गीय माथुर साहब की बेटी की शादी की रौनक माहौल को और आकर्षक बना रही थी ,दरवाजे पर सजावट हो रही थी। अंदर से ढोलक की थाप पर सुहाग बन्नी गाई जा रही थी । मगर मिसेज माथुर का मन बेचैन था । वे अतीत की यादों से घिरीं थीं । माथुर साहब के बेटी की शादी के बड़े अरमान थे वे बेटी की विदाई में बहुत कुछ करना चाहते थे परंतु नियति को कुछ और ही मंजूर था उनकी असमय मृत्यु ने मिसेज माथुर को तोड़ दिया था ।

कुछ दिन तो कट गये रिश्तेदार व मित्र थोड़े दिन तो साथ रहे मगर कब तक ? सब अपने जीवन में रम गए। बच्चों की अकेले परवरिश एक कठिन समस्या थी जो मुंह बाए खड़ी थी ।तब मिसेज आशा माथुर ने शिक्षिका के रूप में अपने जीवन की शुरुआत की और बच्चों को मां-बाप दोनों का प्यार देकर अपना उत्तरदायित्व आज तक निभाती चली आ रही हैं।

आज उनकी आंखों में पति की छवि तैर रही थी ।वे अजीब कशमकश में थीं कि समधी जी का स्वागत कौन करेगा? यह रूढ़िवादी समाज क्या एक विधवा औरत को यह अधिकार देगा कि वह स्वयं समधी जी का स्वागत करें और शादी की रस्में पूरी करें ? वह इसी सोच में व्याकुल हो रही थीं । कहने को तो शादी में रश्मि के ताऊ चाचा मामा फूफा मौसा सभी आए हुए हैं तो उन्हें भी तो यह रिश्ता निभाना चाहिए।तभी रश्मि की बुआ ने आवाज दी ।

भाभी किस चिंता में हो? बड़े भैया से कहो बारात और समधी जी का स्वागत करने के लिए ।”

उन्हें तो खुद भाई की जगह खड़े होकर अपना फर्ज समझना चाहिए रश्मि तो उनकी भी बेटी है इस में कहने की क्या बात है ।” आशा जी ने बड़ी व्याकुलता से कहा।

ताऊ जी यह वार्तालाप सुन रहे थे बोले “अरे बहू मुझे द्वारचार का सामान लाकर दो और जो कुछ भी समधी जी को देना है ।”

आशा जी एक ट्रे में शाल ,इत्र दान ,नारियल और रुपए लेकर आईं उन्हें देते हुए बोलीं “लीजिए भाई साहब ये समधी जी के स्वागत का सामान है।”

बहू बारातियों के स्वागत के लिए फूल माला वगैरह कहां है ? उसका सब इंतजाम हुआ कि नहीं ?

आशा जी घबरा गईं उन्हें तो ध्यान ही नहीं रहा .. पता नहीं माला वगैरा आ पाई है कि नहीं । वे घबराकर बाहर दरवाजे पर आईं और देखती हैं कि एक 28-30 वर्ष का युवक हाथ में मालाएं लिए खड़ा है । वह सोचने लगी यह कौन है मैंने पहले तो इसे कभी नहीं देखा । इतने में बारात दरवाजे पर पहुंच गई और सारे कार्यक्रम विधिपूर्वक होने लगे । ताऊ जी ने समधी जी का गले मिलकर स्वागत किया जय माल की रस्म शुरू हो गई , सभी लोग अपने अपने फोटो खिंचवाने में मग्न हो गये ।

आशा जी उस युवक के बारे में सोचने लगी आखिर यह कौन है जिसने माथुर साहब जी की इज्जत बचाई , वरना तो माला के बिना जग हंसाई हो जाती , पर उन्हें याद नहीं आ रहा था कि यह कौन है ? पर इस समय वह देवदूत ही लग रहा था वह दौड़ दौड़ कर सब इंतजाम देख रहा था।

रात्रि को फेरों का समय भी आ गया , कन्यादान को लेकर कानाफूसी होने लगी कि कन्यादान कौन करेगा ? कोई आगे नहीं आ रहा था पर विधवा से कन्यादान कैसे करने को दिया जा सकता है ? रिश्तेदारों का तो काम ही है कुछ न कुछ बात उठा कर टांग अड़ाते रहना । आशा जी सब सुन कर मौन खड़ी थीं उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी ।

रश्मि सुबह से यह सब देख सुन रही थी , मां को कितने वाक्यबाण झेलने पड़ रहे हैं । उसके सब्र का बांध आखिर टूट ही गया कमरे से बाहर आई और तमक कर बोली ”किस शास्त्र में लिखा है की विधवा कन्यादान नहीं कर सकती जो पति के मरने के बाद अपनी सारी जिम्मेदारियां निभाती है। किसी से कुछ नहीं मांगती, अपने बच्चों का जीवन संवारने के लिए अपनी सारी खुशियां दांव पर लगा देती है। वह कन्या दान करने का अधिकार भी रखती है मेरा कन्यादान मेरी मां ही करेगी यह हक मैं किसी को नहीं दूंगी ।”

सब कानाफूसी करने लगे कितनी बेशर्म लड़की है अपनी शादी की बातें सबके सामने कैसे कर रही है आजकल तो जमाना ही बदल गया है बाप का साया क्या उठ गया मुंह जोर हो गई है, शर्म हया तो रह ही नहीं गयी हमें क्या ? करने दो विधवा को कन्या दान... ।जो होगा वो होता रहे हमें क्या पड़ी है और सब चुप हो गए और आशा जी ने ही कन्या दान किया ।

श्रीमती शीला श्रीवास्तव
अयोध्या वाय पास रोड
भोपाल,मध्य प्रदेश
पिन नं 46 20 10

नारी सशक्तिकरण

नारी सशक्तिकरण मुझे सर्वप्रथम एक मूलभूत ऐतराज़ इसी बात पर है कि नारी जोकि स्वयं शक्ति स्वरूपा है , उसके सशक्तिकरण का नारा क्यों कर दिया जाता है ? इस आधुनिक युग में जहाँ हर वस्तु, व्यक्ति, सोच और विचारधारा प्रगति के पथ पर अग्रसर है वहां नारी की शक्ति में ऐसा क्या ह्रास आ गया कि उसके सशक्तिकरण पर इतना बल दिया जा रहा है ? देखा जाये तो आज की आधुनिक नारी हर क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कन्धा मिला कर ही नहीं बल्कि उससे दो कदम आगे ही चल रही है। फिर नारी के किस सशक्तिकरण की आवश्यकता है?

इस प्रश्न को हम दो विभिन्न मानसिकताओं से परखने का प्रयत्न करते हैं। सर्वप्रथम पुरुष मानसिकता की बात करें तो भारतीय पुरुष में सोच के धरातल पर महाभारत काल से अब तक कोई ख़ास परिवर्तन नहीं आया है। उसकी नज़र में तब भी नारी भोग्या थी , वस्तु के समान दांव पर लगाने योग्य थी, और आज भी पुरुष की नज़र में नारी भोग्या ही है। भारतीय पुरुष को बचपन से ही घुट्टी में पिलाया जाता है कि वह स्त्री का मालिक है, सत्तावान है, उसी का निर्णय अंतिम निर्णय है। उसको बहनों से अधिक मान सम्मान मिलता है और प्राथमिकता भी। यही नींव आगे चल कर उसके सम्पूर्ण व्यवहार को निर्धारित करती है। यह सच है कि यह महान कार्य उसकी माँ के रूप में एक नारी ही करती है परन्तु वह भी तो पति रूपी पुरुष के समक्ष नगण्य होती है। यही नींव हमारे समाज के लिए उस नासूर के समान है जिस पर न जाने कितने अपराधों का कैंसर पनपता है। क्योंकि पुरुष को बचपन से ही सिर्फ एक चीज़ के प्रति नफरत सिखाई जाती है और वो है विरोध। पुरुष सब कुछ सहन कर लेता है विरोध नहीं। और अगर कहीं विरोध मिले तो उसका जवाब उसके पास सिर्फ एक ही होता है अत्याचार। क्योंकि तर्क से जीतना उसे आता ही नहीं।

अब स्त्री मानसिकता की बात कर लेते हैं। स्त्री समाज आधी दुनिया कहलाता है , पर इस आधी दुनिया के पास अपना कहने को क्या है ? पिता या पति द्वारा दिया घर.२ पिता या पति द्वारा दिया सम्मान... अन्यथा आप ही कहिये स्त्री के पास और क्या है ? वह कितना भी पढ़ लिख ले, कितनी भी उन्नति कर ले, पर अगर उसके पास पिता या पति का नाम नहीं है तो समाज की नज़र में उसका कोई अस्तित्व नहीं है। दुःख इस बात का है कि आज भी स्त्री अपनी इस स्थिति का विरोध नहीं करती। बल्कि अपनी सुरक्षा के लिए पुरुष पर आश्रित होना ही उचित समझती है।

इतिहास की बात करें तो राम राज्य में स्वयं भगवान राम ने अपनी पत्नी सीता के निर्दोष होने के बावजूद जानते बूझते हुए समाज के नियमों के तहत उसे घर से निकाल दिया। परन्तु माता सीता ने अपने सतीत्व और आत्मसम्मान की रक्षा हेतु पति द्वारा दोबारा स्वीकार किये जाने के बावजूद घर लौटने की बजाय धरती में समा जाना स्वीकार किया। यह सत्ता और उसके तथाकथित सामाजिक नियम पालन का सशक्त व चुनौतीपूर्ण अस्वीकार था। जिस में एक नारी, एक पत्नी, एक माँ और एक महारानी की गरिमा जुडी हुई थी।

कमाल है आज भी नारी इस प्रकार के अस्वीकार का हौंसला अर्जित नहीं कर पाती। और अगर करती भी है तो या तो निर्भया की तरह बलात्कार का शिकार होती है , एसिड से वीभत्स कर दी जाती है, आरुषि की तरह माँ बाप द्वारा अहनर किलिंग में मार दी जाती है। अब आप ही बताइये आखिर दोषी कौन है ? पुरुष समाज, स्वयं औरत या हम सब की दूषित मानसिकता ? बदलना किसे चाहिए पुरुष को नारी को या हम सब की मानसिकता को ?ये कुछ पंक्तियां यहाँ सार्थक प्रतीत होती है ....

कद्र अब तक तेरी तारीख़ ने जानी ही नहीं
तुझ में शोले भी हैं बस अश्क फ़िशानी ही नहीं
तू हक़ीक़त भी है दिलचस्प कहानी ही नहीं
तेरी हस्ती भी है एक चीज़ जवानी ही नहीं।

काश नारी स्वयं अपनी शक्ति को पहचान कर अपनी पहचान बनाना सीख ले। काश...!

डॉ प्रिया सूफ़ी
होशियारपुर, पंजाब

जल्द आ रहा है

GHAR SE

Amazing Way of Business

जय माँ कामाख्या

BB Group Black Beauty Group

Give a new flight to dreams

BB Online Magazine
Women's own online magazine
first issue of the magazine 16 January 2023, 10 PM

BB Short Films
1st Shooting 27 January 2023 in Gahmar

BB Advertizing
1st fashion show & Audition 29 January 2023 in Patna

Akhand Pratap Singh

Website - blackbeautylive.in
Email - bbgroup2023@gmail.com
9289615645

Contact us Acting, Modeling and open training center